

# डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 2, इंटरटेस्टामेंटल बैकग्राउंड

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

चलो फिर से शुरू करते हैं। कुछ शेयर करें। शायद सिर्फ एक, दो, तीन, या... हाँ, आप पहले ही उस चीज़ को ब्लॉक करना चाहते हैं... आपको याद है कि आपने कैसे... ओह, हाँ, हाँ।

आवाज़ नहीं आ रही... ओह. मैंने तुम्हारा चालू कर दिया. क्या तुमने ये चालू किया? क्या तुम्हें याद है कि तुमने कुछ बंद किया था? नहीं, नहीं, तुम ठीक हो.

मैंने इसे चालू नहीं किया। इसे चालू करो, ठीक है। और मैंने इसे भी प्लग इन नहीं किया, तो इसे देखो।

तो, यह अब चालू है। और इसे प्लग इन करने की आवश्यकता है। ओह, यह वहाँ से प्लग आउट हो जाता है, है ना? हाँ।

ओह, यहीं पर आपने... आपने इसे वीडियो के समान ही रखा है, मुझे लगता है, है न? वहीं, ठीक है। ठीक है, मुझे लगता है... ठीक है। यह कैसा है? हाँ।

एक, दो, तीन। एक, दो, तीन। शुभ दोपहर।

हम सिनॉटिक गॉस्पेल पर बारह-भाग की श्रृंखला पाठ्यक्रम जारी रख रहे हैं, अगर आप चाहें तो। हमारे पहले सत्र में, जिसे हम यूनिट 1 कह सकते हैं, हमने ऐतिहासिक यीशु को देखा, और मूल रूप से बहुत ही त्वरित रेखाचित्रों का दौरा किया, यीशु के कुछ गैर-ईसाई विचार, और फिर यीशु के कुछ प्रशंसित ऐतिहासिक विचार, जो मूल रूप से एक या दूसरे प्रकार के धार्मिक उदारवाद की श्रेणी में आते हैं। और फिर, अंत में, मैंने बताया कि यह किस ओर जा रहा था, चमत्कार के खिलाफ इस तरह की स्थिति के लिए इस्तेमाल किए गए तर्कों पर थोड़ा गौर किया, और फिर उन पर प्रतिक्रिया देने की कोशिश की।

अब हम दूसरी इकाई की ओर बढ़ते हैं, जो कि काफी अलग है, लेकिन समकालिक सुसमाचारों के पूरे मामले के लिए भी प्रासंगिक है, और वह है नए नियम की यहूदी पृष्ठभूमि को देखना। नए नियम, विशेष रूप से सुसमाचारों को समझने के लिए, पुराने नियम के बारे में बहुत कुछ जानना सहायक है, लेकिन पुराने नियम की कथा के अंत और नए नियम की कथा के आरंभ के बीच चार शताब्दियों के दौरान क्या हुआ, इसके बारे में कुछ जानना भी सहायक है। यह वह उत्तरार्द्ध है जिस पर हम यहाँ नज़र डालना चाहते हैं, जिसे ईसाई हलकों में अंतर-नियम काल कहा जाता है, लेकिन समझने योग्य बात यह है कि यहूदी हलकों में इसे अंतर-नियम काल नहीं कहा जाता है।

वे आम तौर पर इसे दूसरा मंदिर काल कहते हैं। इसलिए, हम पहले थोड़ा सा सोचना चाहते हैं कि हमारे पास अंतर-नियम काल के बारे में जानकारी के प्राचीन स्रोत क्या हैं। सबसे पहले, हमारे

पास पुराने नियम में कुछ भविष्यसूचक अंश हैं, और मैं बस कुछ ही मिनटों में वापस आकर उस अवधि के बारे में दानिय्येल के अवलोकन पर एक नज़र डालूँगा, जो दानिय्येल अध्याय 2 में दानिय्येल द्वारा देखी गई छवि के संदर्भ में रेखांकित की गई है, और फिर दानिय्येल अध्याय 7 में जंगली जानवरों के बारे में नबूकदनेस्सर के सपने के बारे में, मेरा मानना है कि यही है।

इसके अलावा, हमारे पास यहूदियों के कुछ धार्मिक लेखन हैं, जो ज़्यादातर अंतर-नियम अवधि के दौरान के हैं, जिन्हें हम ओल्ड टेस्टामेंट अपोक्रीफा और स्यूडेपिग्राफा कहते हैं। इन्हें कुछ ईसाई चर्चों ने बाइबिल, रोमन कैथोलिक और ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च के हिस्से के रूप में स्वीकार किया है, सिवाय उस सामग्री के जिसे हम ओल्ड टेस्टामेंट अपोक्रीफा कहते हैं, और कुछ छोटे क्षेत्रीय चर्चों, इथियोपिक चर्च और इस तरह के अन्य लोगों ने कुछ अन्य सामग्री को स्वीकार किया है जिसे हम अब ओल्ड टेस्टामेंट स्यूडेपिग्राफा कहते हैं। इसलिए, यहूदियों के धार्मिक लेखन, ज़्यादातर अंतर-नियम अवधि के दौरान के हैं, हालाँकि हम नहीं मानते कि वे प्रेरित लेखन हैं, लेकिन वे हमें संस्कृति, कुछ संप्रदायों के धार्मिक विचारों और उस अवधि की कुछ बाइबिल व्याख्या के बारे में कुछ जानकारी देते हैं, और इसलिए उस दिशा में मददगार होंगे।

इसके अलावा, हमारे पास दो अलग-अलग लेखक हैं जिन्हें हम नाम और अनुमानित तिथियों से जानते हैं जो हमें इस अवधि के बारे में जानकारी देते हैं, और वह है अलेक्जेंड्रिया का फिलो, जिसका जन्म संभवतः 20 ईसा पूर्व के आसपास हुआ था और जो 40 ईस्वी के बाद तक जीवित रहा, वह नील नदी के उत्तरी डेल्टा में अलेक्जेंड्रिया नामक बड़े यूनानी शहर में रहने वाला एक यहूदी व्यक्ति था। यह विशेष यहूदी, जिसे हम हेलेनिस्टिक यहूदी कहते हैं, ने ग्रीक संस्कृति का बहुत अधिक हिस्सा अपनाया था। उसने यूनानी दर्शन का अध्ययन किया था, और फिर भी वह बाइबल के प्रति भी वफादार रहने की कोशिश कर रहा था, इसलिए उसने पुराने नियम को यूनानी दर्शन से चयनित विचारों के साथ जोड़ने की कोशिश की।

हम वहाँ हेलेनिज़्म के लिए कुछ आंशिक समायोजन देखते हैं। अपनी स्थिति में, वह ऐसे लोगों की बात करता है जिन्होंने उससे कहीं ज़्यादा दृढ़ता से समायोजन किया। उनमें बहुत से कानूनों को रूपक बनाने की प्रवृत्ति थी, लेकिन उन्हें लगा कि आपको उनका पालन करना चाहिए, जबकि अन्य हेलेनिस्टिक यहूदी थे जो सोचते थे कि कानूनों को रूपक बनाने के बाद, आपको उनका पालन करने की ज़रूरत नहीं है, शाब्दिक रूप से।

तो, अगर आप चाहें तो वह एक उदारवादी हेलेनिस्ट होगा। उससे उत्तर की ओर बढ़ते हुए यरूशलेम क्षेत्र में, हमारे पास एक व्यक्ति जोसेफस है, जिसे अक्सर फ्लेवियस जोसेफस के नाम से जाना जाता है, हालाँकि यह उसका लैटिन नाम है। उनका जन्म 37 ई. में हुआ था और वे 100 ई. के बाद तक जीवित रहे।

वह कम हेलेनाइज़्ड होता। वह यहूदी युद्ध, 66-73, रोम के खिलाफ विद्रोह के दोनों पक्षों में शामिल एक यहूदी था, जिसके परिणाम काफी विनाशकारी थे। उसने यहूदी पक्ष से शुरुआत की, हालाँकि वह उस समय से पहले रोम जा चुका था और शायद रोम के खिलाफ यहूदियों की संभावनाओं के बारे में बहुत आशावादी महसूस नहीं करता था।

जोडापाटा शहर में घेर लिया गया , तो वह और कुछ अन्य लोग छिप गए और यह तय करने के लिए तिनके खींचे कि कौन किसको मारेगा। वे आत्महत्या करने जा रहे थे। किसी तरह, जोसेफस ने सबसे अच्छा, या सबसे अच्छा तिनका पकड़ा, और उस समय जीवित बचे एक अन्य व्यक्ति को आश्वस्त किया कि उन्हें खुद को यहूदियों के हवाले कर देना चाहिए, खुद को रोमनों के हवाले कर देना चाहिए।

जब उन्होंने ऐसा किया, तो जोसेफस ने कहा, मेरे पास रोमन सेनापति वेस्पासियन के लिए ईश्वर की ओर से एक संदेश है। और जब वेस्पासियन ने उसे सुना, तो जोसेफस ने कहा, ईश्वर ने मुझे बताया है कि तुम रोम के सम्राट बनने जा रहे हो। खैर, वेस्पासियन ने यह देखने के लिए जोसेफस को जीवित रखा कि यह सच होगा या नहीं, और शायद वह भी जोसेफस की भविष्यवाणी से प्रभावित था, और देखिए, अपने कुछ कामों के साथ, वह अगले दो या तीन वर्षों के दौरान सम्राट बन गया।

और इसलिए, जोसेफस, जो गुलाम बन गया था और पकड़ा जा रहा था और उसे मौत की सज़ा दी जा सकती थी और शायद अन्यथा उसे मौत की सज़ा दी जाती, अब उसे एक स्वतंत्र व्यक्ति बना दिया गया और रिहा कर दिया गया, और उसके बाद लगभग दस वर्षों के दौरान, उसने यहूदी युद्ध का इतिहास लिखकर अपने संरक्षक, वेस्पासियन को सुविधा प्रदान की। इसलिए, लगभग 80 ई. में, उसने यहूदी युद्ध लिखा। और फिर, उसके लगभग 25 साल बाद, उसने यहूदियों की प्राचीनता नामक एक रचना लिखी।

जोसेफस का यहूदी युद्ध सिकंदर के समय से शुरू होता है और फिर यहूदी युद्ध के अंत तक आता है, और पुरावशेष उत्पत्ति तक वापस जाता है, यहाँ-वहाँ कुछ जोड़कर पुराने नियम को फिर से बताता है और यहूदी युद्ध के फैलने तक आता है। तो, दो बहुत ही महत्वपूर्ण लेखन हैं, जिनमें से दोनों इंटरटेस्टामेंट अवधि को कवर करते हैं। पुराने नियम, अपोक्रीफा और स्पूडेपिग्राफा, फिलो और जोसेफस में भविष्यवाणी करने वाले अंशों के अलावा, हमारे पास बहुत प्रसिद्ध डेड सी स्क्रॉल भी हैं, जो एक संप्रदाय द्वारा लिखित या कॉपी किया गया साहित्य है, जिसका एक मुख्यालय, कम से कम महत्वपूर्ण शिविर, यदि आप चाहें, तो उस स्थान पर था जिसे हम कुमरान कहते हैं, शायद यरूशलेम से 20 मील दक्षिण-पूर्व में, कुछ ऐसा ही।

हमें लगता है कि यह संभवतः एसेन के कुछ प्रकार थे, जो कई मायनों में मेल खाते थे, और निश्चित रूप से, हमारे पास जो कुछ भी है, वह मूल रूप से पवित्रशास्त्र की प्रतियां हैं जिन्हें उन्होंने रखा था, और इसलिए कुछ, इसलिए हमारे पास हिब्रू में बाइबिल की विभिन्न पुस्तकों की सबसे पुरानी प्रतियां हैं, लेकिन उनके अपने कुछ साहित्य भी हैं, और कुछ साहित्य भी हैं जो उनके अपने हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं। पुराने नियम के कुछ छद्मलेख, हनोक और जुबली दोनों, हिब्रू में वैसे भी वहां खंडित पाए गए हैं। इसलिए, उनका अपना साहित्य हमें कम से कम उस विशेष संप्रदाय के बारे में कुछ जानकारी देता है, कि उन्होंने बाइबिल की व्याख्या कैसे की, और उस तरह की चीजें।

बाद की अवधि से, शायद 200 ई. से शुरू होकर शायद 600 ई. तक, हमारे पास रब्बी साहित्य है, जो रब्बियों की परंपरा, फरीसियों की परंपरा, यहाँ तक कि यीशु द्वारा कही गई बातों का लिखित

रूप है, लेकिन जो संभवतः यीशु के अपने मंत्रालय के दौरान पूरी तरह से मौखिक रूप में थी, लेकिन सबसे पहले मिशनाह, लगभग 200 ई. में लिखी गई थी, और तल्मूड, एक लगभग 400 और एक लगभग 550। यदि आप चाहें तो ये सभी रब्बियों की मौखिक परंपरा का संकलन है, और फिर कुछ बाइबिल अनुवाद, व्याख्याएँ, टिप्पणियाँ, आदि, मिद्राशिम। तो, वे हमें कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी देते हैं।

तो, ये अंतर-नियम अवधि के बारे में जानकारी के हमारे मूल प्राचीन स्रोत हैं। अब हम दानिय्येल के उस अवधि के अवलोकन पर एक त्वरित नज़र डालना चाहते हैं क्योंकि हम इसे अंतर-नियम अवधि की हमारी चर्चा की संरचना के भाग के रूप में उपयोग करेंगे। दानिय्येल के अध्याय 2 में, दानिय्येल को एक अजीब मूर्ति का दर्शन दिया गया है।

यह एक मूर्ति है, जिसका श्लोक 32 में सोने का सिर बताया गया है, और फिर उसके वक्ष और भुजाएँ, या यदि आप चाहें तो ऊपरी शरीर, श्लोक 32 में चाँदी से बना बताया गया है, उसी श्लोक में उसके पेट और भुजाओं को काँसे का बताया गया है, उसके पैर लोहे के हैं, श्लोक 33, और फिर उसके पैर आंशिक रूप से लोहे के, आंशिक रूप से मिट्टी के हैं, श्लोक 33। और फिर हम इस छवि के वर्णन के बाद जो क्रिया देखते हैं, उसमें एक संक्षिप्त क्रिया है कि बिना हाथों के काटा गया एक पत्थर नीचे गिरता है और छवि को चकनाचूर कर देता है और फिर चूर्ण में बदल जाता है, और फिर पत्थर बढ़कर पूरी धरती को भर देता है। छवि को अध्याय 2, श्लोक 38-45 में समझाया गया है।

हमें 45 में बताया गया है कि छवि और कार्य हमें बताते हैं कि दानिय्येल के समय के बाद कुछ होगा। फिर, श्लोक 38 में, नबूकदनेस्सर के सार्वभौमिक शासन को सुनहरे सिर द्वारा दर्शाया गया है। श्लोक 39 में, एक और राज्य निम्न होगा। शायद यही है। नीचे वास्तव में शब्द है, इसलिए यह केवल एक भौतिक कथन हो सकता है क्योंकि यह नीचे है, लेकिन यह तथ्य कि आप सोने से चाँदी पर स्विच करते हैं, जो सार्वभौमिक रूप से सोने की तुलना में एक सस्ती धातु रही है, यह सुझाव दे सकता है कि यह किसी तरह से निम्न है।

यह सुझाव देता है कि सिर न केवल व्यक्तिगत रूप से नबूकदनेस्सर का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यदि आप चाहें तो उस साम्राज्य का भी प्रतिनिधित्व करता है। उत्तराधिकारी साम्राज्य, जिसका प्रतिनिधित्व चाँदी द्वारा किया जाता है, एक तीसरा साम्राज्य जो पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा, जैसा कि हमें श्लोक 39 में बताया गया है, काँसे द्वारा दर्शाया गया है, एक चौथा साम्राज्य, जो लोहे की तरह मजबूत है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से लोहे के पैर हैं, जो उसके बाद आने वाले हैं। और फिर, श्लोक 41-43 में, आपको पैरों के बारे में एक छोटी सी टिप्पणी मिलती है, जो यह सुझाव नहीं देती है कि यह पाँचवाँ साम्राज्य है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से चौथे की निरंतरता है, जो लोहे के पैरों के साथ लोहे और मिट्टी के पैरों में जाने के साथ फिट होगा।

लेकिन आंशिक रूप से मजबूत, लोहा, और आंशिक रूप से टूटी हुई मिट्टी, जिसे इस बिंदु पर पकी हुई मिट्टी माना जाता है, गीली मिट्टी नहीं। और फिर पत्थर गिरता है और बाकी को तोड़ता है और बढ़ता है, श्लोक 44 में समझाया गया है: परमेश्वर एक स्थायी राज्य स्थापित करेगा। इसके समानांतर, हमारे पास दानिय्येल अध्याय 7 में दानिय्येल के चार जंगली जानवर हैं। यह वास्तव में

एक सपना है जो दानिय्येल ने देखा था; दूसरा, जिसका मैंने उल्लेख नहीं किया, वास्तव में एक सपना था जो नबूकदनेस्सर ने देखा था।

यहाँ, अध्याय 7, श्लोक 3-14 में जानवरों के एक समूह को चित्रित किया गया है, और फिर श्लोक 19, 20, 21-23 में स्पष्टीकरण के माध्यम से कुछ और विवरण बिखरे हुए हैं। हमें सबसे पहले बताया गया है कि श्लोक 3 में समुद्र से विभिन्न प्रकार के जानवर निकलेंगे। इनमें से पहला एक शेर है जिसके पंख उकाब के हैं, लेकिन फिर उकाब के पंख नोच दिए जाते हैं, और जानवर को ऊपर उठा लिया जाता है, संभवतः उसके पिछले पैरों पर, और उसे एक मानव हृदय दिया जाता है, श्लोक 4। फिर दूसरा जानवर एक भालू है; यह एक तरफ उठा हुआ है, और चूँकि हम इसे देखने के लिए वहाँ नहीं हैं, इसलिए मुझे नहीं पता कि यह वास्तव में कैसा दिखता है, शायद इस तरह झुका हुआ या कुछ और। और यह अपने मुँह में मौजूद तीन पसलियों को कुतर रहा है।

फिर, श्लोक 6 में, हमें बताया गया है कि तीसरा जानवर एक तेंदुआ है, लेकिन यह एक अजीब जानवर है; इसके चार पंख हैं, और इसके चार सिर हैं। और फिर श्लोक 7 और 8 में, और फिर आगे स्पष्टीकरण में, हमें एक चौथे भयानक, भयंकर जानवर के बारे में बताया गया है जिसके लोहे के दांत और पीतल के पंजे और दस सींग हैं, और फिर एक ग्यारहवाँ सींग निकलता है, और यह संतों के खिलाफ दहाड़ता है। श्लोक 9 से 14 में, हमें बताया गया है कि प्राचीन काल का व्यक्ति आता है, जाहिर तौर पर भगवान की एक तस्वीर, और सिंहासन स्थापित किए जाते हैं, और चौथा जानवर नष्ट हो जाता है, और उसका प्रभुत्व मनुष्य के पुत्र जैसे किसी व्यक्ति को दिया जाता है जो आता है और खुद को प्राचीन काल के सामने पेश करता है।

और उसे एक शाश्वत सार्वभौमिक साम्राज्य दिया गया है। श्लोक 17 से 26 में, जानवरों को समझाया गया है, लेकिन बहुत जल्दी। श्लोक 17 में, हमें बताया गया है कि चार जानवर चार राजाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पृथ्वी से उठेंगे, और जैसे-जैसे आप चर्चा में आगे बढ़ते हैं, यह स्पष्ट होता है कि राजाओं और राज्यों का परस्पर उपयोग किया जा रहा है। इसलिए, चौथे राज्य को अन्य से अलग रूप में चित्रित किया गया है, और हमें बताया गया है कि इसके सींग राजाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं और ग्यारहवाँ सींग संतों को समय, समय और आधे समय, संभवतः साढ़े तीन बार के लिए थका देता है।

इस पर कुछ चर्चा है। और फिर मनुष्य के पुत्र को राज्य प्राप्त होता है, आदि, जहाँ यह समझाया गया है कि संत राज्य ले लेंगे और हमेशा के लिए उस पर अधिकार कर लेंगे। खैर, अगर आप चाहें तो ये दो दर्शन दानिय्येल के अध्याय 2 और 7 में हैं।

सदियों से चली आ रही सामान्य व्याख्या, हालांकि पिछली कुछ शताब्दियों में धार्मिक उदारवाद द्वारा इसमें कुछ संशोधन किया गया है, यह है कि दर्शाए गए राज्य बेबीलोन हैं, जो लगभग 609 में संचालित थे जब बेबीलोनियों ने असीरियन साम्राज्य को नष्ट किया, और 539 में जब साइरस ने बेबीलोनियों को ले लिया, और वह अपने राज्य के साथ सफल हुआ, जो कि उसके अपने राज्य, फारस, मेदियों के साथ एक संयुक्त राज्य था, जिसे उसने अपने साथ मिला लिया था, और उन्होंने 539 से 331 ईसा पूर्व तक इसराइल पर शासन किया, और फिर 331 ईसा पूर्व से 30 ईसा पूर्व तक ग्रीस पर, और फिर 30 ईसा पूर्व से 476 ईस्वी तक रोम पर शासन किया। और इसलिए, छवि में,

सोने का सिर बेबीलोन का प्रतिनिधित्व करता है, चांदी की भुजाएं और छाती मेदो-फारस का प्रतिनिधित्व करती हैं, कांस्य पेट ग्रीस का प्रतिनिधित्व करता है, लोहे के पैर रोम का प्रतिनिधित्व करते हैं। जानवरों के दर्शन में, पंखों वाला शेर बेबीलोन का प्रतिनिधित्व करता है, और उसके पैरों पर खड़े होने और उसमें मानव हृदय डालने का विचार, वास्तव में, हमें नबूकदनेस्सर के दिमाग खोने और कुछ समय के लिए जानवर जैसा बनने और फिर ठीक होने की घटना से जोड़ सकता है। पसलियाँ खाने वाला और एक तरफ उठा हुआ भालू; कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि एक तरफ उठा हुआ भालू इस तथ्य का प्रतिनिधित्व करता है कि इसका फ़ारसी पक्ष इसके मीडियन साम्राज्य पक्ष से बड़ा है।

मैं इसे शुद्ध अटकलबाजी मानूंगा, अगर यह बाद में एक दर्शन न होता, जिसके बारे में हमें बताया गया है कि वह मेदो-फारस का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें एक तरफ बड़े सींग वाला जानवर है और दूसरी तरफ छोटा सींग है। और इसलिए, फारसी पक्ष बड़ा सींग है, इसलिए मुझे लगता है कि यह शायद सही है। चार सिर वाले तेंदुए को ग्रीस माना जाता है, और हम डैनियल 8 में इस बाद के विवरण से देखेंगे, जिस पर हम चर्चा नहीं करने जा रहे हैं, कि वहां का राज्य, जिसके बारे में हमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि ग्रीस है, एक जानवर है जिसके सिर में एक सींग है जो टूट गया है और उसकी जगह चार सींग आ गए हैं।

तो, संभवतः, यहाँ चार सिर और चार पंख राज्य के इस चार-गुना विभाजन को दर्शाते हैं जब मूल एकीकृत राज्य को नुकसान पहुँचाया जाता है, यदि आप चाहें तो। संभवतः तब रोम भयानक दस सींग वाला, वास्तव में ग्यारह सींग वाला, अंततः जानवर बन जाता है, और हम इस पर आगे नहीं जा रहे हैं, न ही इस बिंदु पर उदारवादियों के दावे के सवाल पर जा रहे हैं कि वे दूसरे राज्य को मीडिया द्वारा ग्रीस की जगह फारस और रोम को ग्रीस से बदल देते हैं ताकि इसे मैकाबीन काल में सामने लाया जा सके। हमारे विषय से हटकर, है न? हम जो करने जा रहे हैं वह अब इंटर-टेस्टामेंट अवधि की हमारी चर्चा में है, हम इसे इस संदर्भ में विभाजित करने जा रहे हैं कि इन समयों में इज़राइल पर किसका नियंत्रण था।

खैर, जब तक हम इंटर-टेस्टामेंट तक पहुँचते हैं, तब तक बेबीलोन पहले ही दृश्य से बाहर हो चुका होता है। आपको याद होगा कि वापसी का चित्रण जकर्याह और हागै में किया गया है, वास्तव में नहेमायाह आदि में, लेकिन मेरा मतलब भविष्यद्वक्ता जकर्याह और हागै से है। तो, हम मेदो-फारस और फिर फारसियों या मेदो-फारसियों के अधीन फिलिस्तीन, और फिर ग्रीस के अधीन फिलिस्तीन, और फिर रोम के अधीन फिलिस्तीन को लेंगे, सिवाय इसके कि ग्रीस से रोम तक हस्मोनियों या मैकाबीज़ के अधीन एक संक्षिप्त स्वतंत्रता अवधि है, इसलिए हम इसे डालने जा रहे हैं।

फिलिस्तीन फारसियों के अधीन, फिलिस्तीन यूनानियों के अधीन, यहूदी स्वतंत्रता हस्मोनियों के अधीन, और फिर रोम के अधीन फिलिस्तीन। तो यही वह रास्ता है जिस पर हम आगे बढ़ने जा रहे हैं, तो चलिए इस पर एक नज़र डालते हैं। तो, हमारी अगली श्रेणी फारसियों के अधीन फिलिस्तीन होगी, 539 से 331 ईसा पूर्व फारसी साम्राज्य का प्रभुत्व साइरस के उदय के साथ शुरू होता है, साइरस 559 ईसा पूर्व में वापस आता है, इसलिए यह 30 साल पहले की बात है जब वह बेबीलोन पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है, और अनशन नामक एक छोटे से राज्य को

विरासत में लेता है, जो मूल रूप से फारस है, लेकिन फिर वह 550 में मेड्स को हरा देता है और इससे बेबीलोन के लोग बहुत चिंतित हो जाते हैं।

उस समय का राजा, नबोनिडास, जो, क्या कहें, साइरस को मेदियों के खिलाफ विद्रोह का समर्थन करने और मेदियों को कमजोर करने की कोशिश करने के लिए कुछ पैसे दे रहा था, अचानक उसे एहसास हुआ कि मेदियों को हराने के बाद साइरस अब मेदियों से भी बड़ा खतरा बन गया है। लेकिन फिर साइरस पहले उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता है और 546 में एशिया माइनर पर कब्जा कर लेता है और फिर वापस आकर 539 में बेबीलोन पर कब्जा कर लेता है। तो यह साइरस के उदय का एक बहुत ही संक्षिप्त विवरण है; इसमें बहुत अधिक विवरण है, जिनमें से अधिकांश मुझे अब याद नहीं हैं लेकिन मैंने उनका अध्ययन किया है।

उस समय कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं, जैसे कि फारसियों का साम्राज्य में आना। इनमें से सबसे पहली घटना 539 से 530 ईसा पूर्व में साइरस के नेतृत्व में यहूदियों की वापसी थी। असीरियन और बेबीलोनियों के विपरीत, साइरस अन्य धर्मों को अपमानित करने से बचने की कोशिश करता है।

असीरियन और बेबीलोनियों के विपरीत, साइरस ने निर्वासन नीति को समाप्त करने का फैसला किया। उन दोनों साम्राज्यों का विचार था कि किसी अधीनस्थ लोगों को दबाए रखने का सबसे अच्छा तरीका उनके लोगों को निर्वासित करना और उन्हें अन्य भाषाओं के लोगों के बीच फैला देना था। इस तरह, उनके विद्रोह को संगठित करने में सक्षम होने की संभावना कम थी। खैर, साइरस ने इसे समाप्त कर दिया और इस तरह विभिन्न लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार अपने क्षेत्रों में लौटने की अनुमति दी।

इसलिए, यहूदियों को वापस लौटने की अनुमति है। एज्रा 1 आयत 2-4 में हम अपने लिए एक रूपरेखा देखते हैं। उनमें से बहुत से लोग ऐसा नहीं करते, लेकिन कुछ लोग ऐसा करते हैं।

और इसलिए, अब हम लगभग 70 वर्षों में पहली बार, इस समय लगभग 50 वर्षों में, यहूदी अब उस स्थान पर लौट रहे हैं जिसे हम यहाँ फिलिस्तीन कहते हैं। मैं फिलिस्तीनी-यहूदी बहस में पढ़ने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मैं मूल रूप से भूमि और इज़राइल या यहूदियों के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में इसका उपयोग कर रहा हूँ। दूसरी महत्वपूर्ण बात जो तब फारसियों के अधीन हुई थी, वह मंदिर का पुनर्निर्माण या यहूदी शब्दावली में दूसरे मंदिर का निर्माण था।

सोलोमन का मंदिर, पहला मंदिर, और यह मंदिर, दूसरा मंदिर। साइरस ने शुरू में पुनर्निर्माण शुरू करने की अनुमति दी, लेकिन फिर पड़ोसियों के विरोध के कारण रोक दिया। एज्रा 6 और एज्रा 4 में इसका एक स्केच देखें। लेकिन फिर, जब साइरस की मृत्यु हो गई, तो एक अंतराल हुआ और कुछ लड़ाई आगे-पीछे हुई, और अंततः, डेरियस, यहाँ डेरियस I, 521 में सत्ता में आया और 46 तक शासन करेगा, इसलिए शासन का काफी लंबा समय।

और क्योंकि यहूदियों ने अन्य लोगों की तरह विद्रोह करने के बजाय लगातार दारा के प्रति वफ़ादारी दिखाई थी, इसलिए यहूदियों को अपने मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी गई।

और इसलिए, उन्होंने लगभग 520 या उसके आसपास अपने मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू किया, और मंदिर 515 के आसपास भविष्यद्वक्ताओं हागै और जकर्याह के नेतृत्व में पूरा हुआ, और आप उन दोनों में इसका संदर्भ देखते हैं। फिर, राज्यपाल जरुब्बाबेल के अधीन, जो दाऊद का वंशज था, और महायाजक येशू, जो संभवतः महायाजक वंश से आया था,

तो, हमारे पास यहूदियों की वापसी है, और वे गुडमैन के वर्षों में पहली बार अपनी भूमि पर वापस आ गए हैं। वास्तव में यह पहले निर्वासन से लेकर पहली वापसी तक 70 साल का समय है और पहले मंदिर के विनाश से लेकर दूसरे मंदिर के निर्माण तक 70 साल का समय है। इसलिए मूल रूप से कैद को 70 साल लंबा माना जाता है।

यहूदियों के बीच कुछ महत्व की तीसरी घटना, वास्तव में अगर आप चाहें तो दो घटनाएँ, एज्रा के अधीन यहूदा में पुनरुत्थान और नहेम्याह के अधीन यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण है। ये घटनाएँ फारसी राजा अर्तक्षत्र। के शासनकाल के दौरान घटित होती हैं। इनमें से पहली घटना लगभग 4... खैर, अर्तक्षत्र ने लगभग 465 में शासन करना शुरू किया, और एज्रा, लगभग 458 में, बेबीलोन से वापस यरूशलेम भेजा गया, और उसने फारसी राजा की अनुमति से लोगों को कानून का पालन करने के लिए पुनः स्थापित किया। और फिर कुछ वर्षों बाद, लगभग 445 में, नहेम्याह, जो उस समय राजा का प्यालावाहक बन गया था, इसलिए शाही दरबार में एक बहुत ही अंतरंग अधिकारी, यदि आप चाहें तो, फारसी राजा द्वारा दीवारों के पुनर्निर्माण के लिए राज्यपाल के रूप में भेजा गया था।

दीवारों का पुनर्निर्माण करना बहुत महत्वपूर्ण है। हम गांव को एक छोटे शहर और शहर को एक बड़े शहर के रूप में सोचते हैं, लेकिन उस समय जब हवाई जहाज और प्रमुख तोपखाने और उस तरह की सभी चीजों से पहले, एक गांव और एक शहर के बीच का अंतर इतना बड़ा आकार नहीं था; यह एक किला था। इसलिए, एक गांव काफी बड़ा हो सकता है, लेकिन अगर यह बिना किलेबंदी वाला है, तो यह एक गांव है।

एक शहर काफी छोटा हो सकता है, लेकिन अगर यह सिर्फ एक किला नहीं था, अगर यह एक ऐसी जगह थी जहाँ बहुत से लोग रहते थे, और यह किलेबंद था, तो यह एक शहर था। इसलिए अनिवार्य रूप से, 445 ईसा पूर्व में शहर की दीवारों के पूरा होने के साथ यरूशलेम फिर से एक शहर बन गया। तो ये तीन प्रमुख हैं, जिन्हें हम फारसी काल की चार प्रमुख घटनाएँ कहते हैं, यहूदियों को वापस लौटने की अनुमति देना, उन्हें शहर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देना, और फिर मंदिर का पुनर्निर्माण करना, और फिर यहूदा में पुनरुद्धार, और दीवारों का पुनर्निर्माण करना।

एक और महत्वपूर्ण घटना, और हमें ठीक से पता नहीं है कि यह कब हुई और इस तरह, यह बहुत अस्पष्ट है, यहूदी इतिहास में एक महत्वपूर्ण चीज के रूप में अरामी भाषा का उदय है। अरामी भाषा इससे बहुत पहले से मौजूद थी। यह उस क्षेत्र की पुरानी भाषा थी जिसे पारंपरिक रूप से अंग्रेजी में सीरिया कहा जाता था, लेकिन सीरिया और असीरिया के साथ यह काफी भ्रामक है।

तो, हिब्रू शब्द अराम है, और इसे कुछ पुराने नियम के हलकों में भी उठाया जा रहा है। किसी भी मामले में, यह ऊपरी फ़रात घाटी है। और भाषा आसपास थी; आप इसका संदर्भ तब देखते हैं जब लाबान और जैकब अलग होते हैं, वे पत्थरों का यह ढेर बनाते हैं, और जैकब इसे पत्थरों के ढेर के लिए हिब्रू शब्द देता है जो एक गवाह के रूप में कार्य करता है, जो हिब्रू में गैलिड नामक एक तकनीकी शब्द है, जबकि जाहिर तौर पर अरामी में ऐसा नहीं है।

तो, एक मुहावरा है जिसका प्रयोग जगार के लिए किया जाता है साहा यदि आप चाहें तो इस साक्ष्य के पत्थर, इस साक्ष्य के निशान को दर्शाने के लिए दुथा या ऐसा ही कुछ इस्तेमाल किया जाता है। खैर, फिर, जैकब और लाबान के समय के बाद, जो कि, 1800 या ईसा पूर्व जैसा कुछ होगा, यह प्राचीन निकट पूर्व की एक कूटनीतिक भाषा बन गई क्योंकि सीरिया ने पूरे उपजाऊ अर्धचंद्राकार क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर ली। उन्होंने मूल रूप से उस क्षेत्र के माध्यम से व्यापार भाषा के रूप में अरामी को अपनाया; बेबीलोनियों ने इसे जारी रखा, फ़ारसियों ने इसे जारी रखा, आदि।

कहीं न कहीं, इसे यहूदियों ने अपनाया है, और उनका सबसे अच्छा अनुमान है कि यह बेबीलोन के निर्वासन के दौरान था कि कुछ यहूदी ऐसे क्षेत्र में चले गए जहाँ उनके आस-पास के लोग हिब्रू नहीं बोलते थे, और फिर भी, और जाहिर है, उनमें से कई अपनी मूल भाषा बोलते थे, लेकिन यह व्यापारिक भाषा उपलब्ध थी, और इसलिए उन्होंने अरामी बोलना सीखा। नहेमायाह 8 आयत 7 और 8 में, ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय बेबीलोन के निर्वासन से लौटने वाले बहुत से यहूदी, यानी निर्वासित लोगों के बेटे, पोते, परपोते, आदि, अब वास्तव में हिब्रू भी नहीं जानते थे। और इसलिए, जब नहेमायाह वापस इस्राएल में स्थिति में कानून से पढ़ता है तो कुछ अनुवाद दिया जा रहा है।

अंतर-नियम अवधि के अंत के करीब पहुँचते हैं, तो आपको आराधनालय सेवाओं में उन लोगों के लाभ के लिए पुराने नियम का अरामी भाषा में मौखिक अनुवाद मिलना शुरू हो जाता है जो हिब्रू नहीं समझ सकते थे। और यह कुछ समय तक मौखिक रहा, और उन्हें टारगमस कहा जाता था, जो मूल रूप से अनुवाद करने के लिए एक क्रिया से लिया गया था, और वे अभी भी यीशु के समय में उपयोग में हैं, और वास्तव में, वे 400 ईस्वी और 550 ईस्वी में रब्बीनिक तल्मूड्स की प्रमुख भाषाओं में से एक बन गए हैं। तो यह अरामी भाषा है, और यह महत्वपूर्ण है, और यह इस फ़ारसी काल के आसपास कभी-कभी उत्पन्न हुई। फ़ारसी काल की एक और विशेषता, या फ़ारसी काल के बेबीलोनियन अंत, आराधनालय का उदय है।

आराधनालय उन लोगों के लिए पूजा स्थल बन जाता है जो मंदिर में नहीं जा पाते हैं, और इसमें प्रार्थना और बाइबल अध्ययन तो होता है लेकिन कोई बलिदान नहीं होता। इसलिए, पूजा एक गैर-बलि पूजा है। इसकी उत्पत्ति की तारीख अस्पष्ट है।

आम धारणा यह है कि यह बेबीलोन की कैद है, क्योंकि उस समय जिन लोगों के पास मंदिर नहीं था, वे वहाँ नहीं जा सकते थे। पुराने नियम में कुछ टिप्पणियाँ हैं जो बताती हैं कि पूरे देश में पूजा के स्थान थे जो ऊँचे स्थान नहीं लगते, और इसलिए यह सुझाव दे सकता है कि जब इस्राएल कैद से पहले भी देश में था, तब भी आप यरूशलेम से दो या तीन दिन की पैदल दूरी पर थे, और यदि

आप पूजा के लिए इकट्ठा होना या कुछ करना चाहते थे, तो ऐसा कुछ करने के लिए कोई स्थानीय स्थान हो सकता था। तो, यह बेबीलोन की निर्वासन से भी पहले का हो सकता है।

हम नहीं जानते। वैसे भी, हम जानते हैं कि यह दूसरे मंदिर के साथ-साथ जारी रहा। तो, दूसरा मंदिर 515 ईसा पूर्व से 70 ईस्वी तक बना रहा, और तब से हमारे पास यह आराधनालय मौजूद है।

रब्बी के एक अंश में कुछ इस तरह का उल्लेख है कि यरूशलेम में 100 आराधनालय थे। वहाँ क्या चल रहा था? खैर, जाहिर है, किसी तरह की संगति के स्थानीय स्थान। हम विभिन्न टिप्पणियों से देखते हैं, जिसमें नया नियम भी शामिल है, कि उनमें से कुछ विशेष क्षेत्रों के लोगों के लिए आराधनालय थे।

फ्रीडमेन का आराधनालय या लोगों का आराधनालय, आप जानते हैं, यह एंटिओक या उस तरह के किसी स्थान से वापस आया होगा। खैर, 70 ई. में द्वितीय मंदिर के विनाश के साथ, यह द्वितीय मंदिर के विनाश के बाद यहूदी पूजा का एकमात्र स्थान बन गया, और आज तक यही बना हुआ है। इसलिए, दुनिया भर में बिखरे हुए विभिन्न यहूदी पूजा स्थल, भले ही उन्हें कुछ स्थानों पर मंदिर या कुछ और कहा जाता हो, वे वास्तव में एक या दूसरे प्रकार के आराधनालय हैं।

खैर, हमारे पास फ़ारसी काल के अंतर्गत एक या दो शब्द कहने के लिए एक और विषय है, और वह है इंटरटेस्टामेंट मंदिर। यरूशलेम मंदिर का पुनर्निर्माण यहीं होता है, और जैसा कि मैं कहता हूँ, यहूदियों के बीच इसे दूसरा मंदिर या दूसरा यरूशलेम मंदिर कहा जाता है, जिसे 515 में बनाया गया था और 70 ई. में रोमनों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। यह इस अर्थ में रूढ़िवादी मंदिर था कि कम से कम वे ईश्वर की प्रकृति के बारे में बाइबिल के विचारों के साथ बने रहे, उस तरह की बातें, और एक तरह से या किसी अन्य तरीके से मोज़ेक विनियमन को जारी रखा। हालाँकि, कहीं न कहीं, उस क्षेत्र में एक मंदिर विकसित किया गया था जिसे हम सामरिया कहते हैं, जिसे अक्सर माउंट गेरिज़िम मंदिर कहा जाता है, क्योंकि यह उन दो पहाड़ों में से एक पर स्थित था, जहाँ हर सात साल में वाचा नवीनीकरण समारोहों में इस्राएली खड़े होते थे, एक समूह को एक पहाड़ पर खड़ा होना था, और दूसरे को इस पहाड़ पर, और एक आशीर्वाद चिल्लाता था और दूसरा शाप चिल्लाता था, आदि।

इसके निर्माण की तिथि अनिश्चित है, जो 450 ईसा पूर्व से 330 ईसा पूर्व के बीच की अवधि का सुझाव देती है। इसे सामरी लोगों ने बनवाया था, लेकिन यरुशलम में जो कुछ हो रहा था उससे नाखुश पुजारियों की मदद से इसे उत्तर की ओर ले जाया गया, आदि। इसे 128 ईसा पूर्व में हस्मोनियों या मैकाबीज़ ने नष्ट कर दिया था, लेकिन यह अभी भी नए नियम के समय में एक पवित्र स्थल है, जॉन 4.20। आप महिला को यह कहते हुए देख सकते हैं, यहाँ इस पहाड़ पर, हम पूजा करते हैं, आदि।

और यही बात है, शायद 30 ई.पू. या उस तरह की कोई बात, और फिर भी इसे तब भी पवित्र माना जाता था, और आज भी इसे पवित्र माना जाता है। सामरी लोगों का एक छोटा समूह अभी भी मौजूद है; मुझे वर्तमान संख्या नहीं पता; 70 के दशक में मैंने जो देखा था, उसमें वे कुछ सौ

तक सिमट गए थे। इसलिए, हम अभी भी वहाँ पूजा गतिविधियाँ करते हैं, वास्तव में अभी भी वहाँ फसह सेवा है, और अभी भी वहाँ बलिदान होता है।

इसलिए, उन्होंने बीच-बीच में बलि देना जारी रखा, कम से कम बीच की अवधि में, लेकिन हम साल में एक बलि के बारे में बात कर रहे हैं, जबकि यरूशलेम मंदिर में कम से कम दो बलि प्रतिदिन दी जाती थी। इन दो मंदिरों के अलावा, मिस्र में एक मंदिर विकसित किया गया है, जिसे आमतौर पर एलिफेंटाइन मंदिर कहा जाता है, ताकि इसे मिस्र के उत्तर में स्थित मंदिर से अलग किया जा सके। ऐसा लगता है कि इसकी स्थापना शायद 525 ईसा पूर्व के आसपास हुई थी और यह लगभग 390 ईसा पूर्व तक चला। हमें लगता है कि हमारे पास इसके रिकॉर्ड हैं, वास्तव में केवल पपीरी से जो उस अवधि से बच गए हैं।

मुझे लगता है कि यह यहूदी सैनिकों के लाभ के लिए बनाया गया था, जिन्हें मिस्र पर विजय प्राप्त करने के बाद फारसियों द्वारा भाड़े के सैनिकों के रूप में काम पर रखा गया था, या शायद भाड़े के सैनिकों के रूप में गुलाम बनाया गया था। और इसलिए, वे यहाँ रहते थे, ठीक है, नीचे या ऊपर, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप मानचित्र के बारे में सोच रहे हैं या नहीं। यह मानचित्र पर दक्षिण में है, लेकिन नील नदी के ऊपर नील नदी के पहले झरने, एलिफेंटाइन पर है।

वे वहाँ रहते थे। हो सकता है कि वे मनश्शे के समय से आए शरणार्थी रहे हों, हमें नहीं पता। कुछ संकेत हैं कि वे संभवतः बहुदेववादी थे, कि वे कुछ ऐसी परेशानियाँ उठा रहे थे जो हम पहले से ही यिर्मयाह में देख सकते हैं, जहाँ यिर्मयाह टिप्पणी करता है कि जो यहूदी उसे मिस्र ले गए थे वे अभी भी स्वर्ग की रानी की पूजा कर रहे थे।

और इसलिए जाहिर है कि यहाँ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। मैंने एक अन्य मंदिर का उल्लेख किया है जो वास्तव में फ़ारसी काल के बाद का है, लेकिन चूँकि हम यहाँ मंदिरों पर चर्चा करने जा रहे हैं, इसलिए हम इसे यहाँ शामिल करेंगे। यह मिस्र में बाद का लियोन्टोपोलिस मंदिर है, जिसकी स्थापना लगभग 160 ईसा पूर्व में हुई थी, और फिर 72 ईस्वी में रोमनों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। इसे मैकाबीन काल में ओनियास III नामक एक उच्च पुजारी द्वारा बनाया गया था, जिसे एंटीओकस एपिफेन्स द्वारा पुजारी पद से हटा दिया गया था।

हम बाद में उसके बारे में बात करेंगे। और इसलिए, यह व्यक्ति मिस्र भाग गया, और संभवतः मिस्र के यहूदी समुदाय द्वारा वहाँ एक मंदिर बनाया गया था, लेकिन यहूदी युद्ध के बाद, रोमियों को कोई भी ऐसा स्थान नहीं चाहिए था जो रोम के खिलाफ विद्रोह के केंद्र के रूप में कार्य करे, और इसलिए उन्होंने इसे नष्ट कर दिया। खैर, यह फारसियों के अधीन फिलिस्तीन का एक बहुत ही त्वरित दौरा है।

फिर हम 331 ईसा पूर्व से लेकर 160 ईसा पूर्व तक यूनानियों के अधीन फिलिस्तीन को देखते हैं। यही वह अवधि है जब मैकाबीज़ को अंततः ग्रीक साम्राज्य के अवशेषों से अपनी स्वतंत्रता मिलेगी। हम सिकंदर से शुरू करते हैं, जिसे बाद में सिकंदर महान के रूप में जाना जाता है, जिसने लगभग 336 से 329 ईसा पूर्व तक शासन किया। वह फिलिप नामक एक मैसेडोनियन

शासक का पुत्र था, और उसके पिता, फिलिप की हत्या तब की गई थी जब सिकंदर केवल 20 वर्ष का था, सिकंदर द्वारा हत्या नहीं की गई थी, और फिर भी 20 वर्ष की आयु में सिकंदर को फिलिप की सेना में एक जनरल के रूप में पहले से ही कुछ अनुभव था, और इसलिए कुछ वर्षों के भीतर वह अपने पिता के राज्य पर अपना नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम था, और उसके पिता, फिलिप के पास जो प्रोजेक्ट थे, उनमें से एक यह था कि फिलिप ने खुद को एक ग्रीक के रूप में पहचाना, भले ही वह मैसेडोनियन था, ग्रीस के उत्तर का क्षेत्र, और सिकंदर ने भी ऐसा ही किया। फिलिप के दिमाग में जो प्रोजेक्ट था, उनमें से एक यूनानियों से फारसियों के खिलाफ बदला लेना था, जिन्होंने उससे एक सदी पहले या उससे डेढ़ सदी पहले आक्रमण किया था।

इसलिए एक बार जब सिकंदर ने मैसेडोन और ग्रीस पर फिर से कब्जा कर लिया, तो उसने 334 ईसा पूर्व में सिर्फ 35,000 सैनिकों के साथ एशिया माइनर पर आक्रमण किया। वैसे, यह बहुत ज्यादा सैनिकों जैसा लगता है, लेकिन इतिहासकारों के अनुसार, जब फारसियों ने डेढ़ सदी पहले ग्रीस पर आक्रमण किया था, तो उनके पास दस लाख से ज्यादा सैनिक थे। तो, आप 35,000 सैनिकों के साथ क्या करने जा रहे हैं? खैर, निश्चित रूप से, एक फायदा यह था कि फारसी खुद एक हजार मील दूर अपने साम्राज्य में वापस आ गए थे, और उनके पास एशिया माइनर में बहुत सारे सैनिक थे, लेकिन वे सभी 50 या 100 किलोबंद क्षेत्रों में बिखरे हुए गैरीसन सैनिक थे, इसलिए उन्हें इकट्ठा करना आसान नहीं था।

सिकंदर उस वर्ष पश्चिमी एशिया माइनर में त्रैनिकस नदी पर विजय प्राप्त करने में सक्षम था, और इसने वास्तव में एशिया माइनर को उसके नियंत्रण में लाने के लिए रास्ता खोल दिया। एशिया माइनर में बहुत सारे यूनानी रहते थे, और वे फारसियों से खुश नहीं थे, और वहाँ बहुत सारे अन्य लोग रहते थे। फारसी लोग वहाँ के मूल निवासी नहीं थे।

इसलिए, हेरोडोटस के अनुसार, इस महत्वपूर्ण युद्ध को जीतने के बाद सिकंदर को बहुत समर्थन मिला और फिर उसके पास एशिया माइनर में अपना नियंत्रण मजबूत करने और फिर पूर्व की ओर बढ़ने के लिए लगभग एक वर्ष का समय था। मुझे लगता है कि ऐसा ही था। कहानी यह है कि वह एक जगह गया, एक गॉर्डियन, जहाँ एक रथ था जिसके टाँग पर क्रॉसबार को जोड़ने के लिए एक विस्तृत गाँठ थी, और एक किंवदंती थी कि जो कोई भी इस गाँठ को खोल सकता था वह दुनिया का शासक बन जाता था। खैर, सिकंदर ने कुछ मिनटों तक इसके साथ खिलवाड़ किया और स्पष्ट रूप से सफल नहीं हुआ।

सिकंदर धैर्य का उदाहरण नहीं था; उसने अपनी तलवार निकाली, रस्सी को तोड़ दिया, और कहा कि कौन जानता है कि उसने वास्तव में ऐसा कहा था या नहीं। इस प्रकार, मैं सभी गॉर्डियन गाँठों या उस तरह की किसी चीज़ को खोल देता हूँ। खैर, वह उस समय समझे गए अनुसार दुनिया को जीतने के लिए आता है। तो, अगली लड़ाई एशिया माइनर के दूसरे छोर पर इस्सस में होती है, और इस समय तक, फारसियों ने एक बड़ी सेना इकट्ठी कर ली है और उससे लड़ने के लिए आ गए हैं। इस्सस में एक बड़ी लड़ाई होती है, और सिकंदर शानदार तरीके से जीतता है, जिससे सीरिया, फिलिस्तीन और मिस्र उसके लिए खुल जाते हैं।

फारसी राजा मुश्किल से बच पाता है; उसका शाही परिवार वास्तव में बच नहीं पाता; उन्हें बंदी बना लिया जाता है और उन्हें फिर से एक और सेना बनाने के लिए फारस की राजधानी तक वापस जाना पड़ता है। इसलिए, सिकंदर के पास कुछ साल होते हैं, और फिर वह नीचे आता है और फिलिस्तीन और मिस्र आदि पर कब्जा कर लेता है। वहाँ एक दिलचस्प घटना हुई, जिसका उदारवादी जमकर खंडन करते हैं, लेकिन जोसेफस कहते हैं कि यह वास्तव में हुआ था कि सिकंदर यहूदियों से बहुत खुश नहीं था क्योंकि उच्च पुजारी ने उसे सेना भेजने से मना कर दिया था क्योंकि वह उत्तरी सीरिया पर कब्जा कर रहा था क्योंकि उच्च पुजारी ने कहा था कि उसने फारस के राजा से प्रतिज्ञा की थी कि वह फारस के राजा के खिलाफ नहीं लड़ेगा।

इसलिए, सिकंदर, बहुत खुश नहीं था, उस ओर जा रहा था, और महायाजक ने अपने वस्त्र पहन लिए, हम कहेंगे, और सभी को प्रार्थना करने के लिए कहा, और लोगों का एक जुलूस सिकंदर से मिलने के लिए निकल पड़ा। जब सिकंदर उनसे मिला, तो सिकंदर ने कहा कि जब वह ग्रीस वापस आया था, तो उसने एक सपने में इस आदमी को देखा था और उससे कहा था कि उसे उसके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, आदि। और फिर, जोसेफस के अनुसार, सिकंदर को उसके बारे में डैनियल में भविष्यवाणियाँ दिखाई गईं।

बेशक, उदारवादी हलकों में यह बात लोकप्रिय नहीं है क्योंकि उन्हें लगता है कि दानियेल को अगले 150 सालों तक नहीं लिखा गया था। लेकिन किसी भी मामले में, यह कहानी है, और जिस बारे में कोई अटकलें नहीं हैं वह यह है कि सिकंदर ने किसी कारण से यहूदियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया और अपने आस-पास के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। तो, हम यहीं हैं।

वैसे भी, सिकंदर आखिरकार मिस्र पर कब्जा करके जीत जाता है। मिस्र के बारे में भी एक कहानी है, कि सिकंदर नील नदी के पश्चिम में मिस्र के रेगिस्तान में अमोन के पास जाता है। वहाँ एक दैवज्ञ है और उसे फिर से एक अनुकूल दैवज्ञ मिलता है कि वह दुनिया को नियंत्रित करेगा।

तो, इनमें से कितनी कहानियाँ सच हैं? हमारे पास टाइम मशीन नहीं है। तो, वैसे भी, 331 में, वह अब फारस के केंद्र की ओर बढ़ गया है, अगर आप चाहें, और गौगामेला में एक बड़ी लड़ाई होती है, और यहाँ सिकंदर की सेना फारसी सेना को नष्ट कर देती है, फारसी साम्राज्य को नष्ट कर देती है, और फारसी राजा अपने साम्राज्य के पूर्वी छोर की ओर छिपने के लिए पूर्व की ओर बढ़ता है, और सिकंदर और उसके सैनिक उनका पीछा करते हैं, और अंततः, उनके साथ पकड़ने से ठीक पहले, फारसी राजा का पीछा करने वाले लोग उसकी हत्या कर देते हैं और सिकंदर के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं। सिकंदर को साम्राज्य का भ्रम था, जो शायद एक बुरा अनुमान नहीं है, और उसने जितना संभव हो सके उतनी भूमि पर विजय प्राप्त करने का फैसला किया, लेकिन उसके सैनिक अंततः, जब वे उस जगह पर पहुँचे जिसे हम अब भारत कहते हैं, तो उन्होंने बहुत कुछ कह दिया।

और इसलिए वे बेबीलोन वापस चले गए, और सिकंदर 33 साल की उम्र में बेबीलोन में मर गया, उसने इस पूरे क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी। खैर, सिकंदर का एजेंडा दुनिया के ज़्यादा से ज़्यादा हिस्से पर विजय प्राप्त करना था, लेकिन साथ ही पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों को मिलाना और

ग्रीक विचारों और दृष्टिकोणों और इस तरह के अन्य चीज़ों को अपने विजित क्षेत्र में फैलाना था, जिसमें ग्रीक भाषा भी शामिल थी। यही सिकंदर है।

खैर, अब सिकंदर की मृत्यु हो चुकी है, 323 में, 33 वर्ष की आयु में, और यह हमें उत्तराधिकार के लिए संघर्ष की ओर ले जाता है। सिकंदर का बेटा अभी भी एक बच्चा है, और सिकंदर का भाई मानसिक रूप से अक्षम है। इसलिए, सिकंदर के अधीन सेनापति बेटे के लिए सिंहासन को बनाए रखने की कोशिश करने के लिए एक साथ आते हैं, लेकिन वे एक-दूसरे से लड़ने लगते हैं, और जब यह सब चल रहा होता है, तो भाई मर जाता है, बच्चा मर जाता है, और एक बार जब बच्चा मर जाता है, तो उसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं होता है... अगर यह संभव हो सकता है तो विजेता सब कुछ ले जाता है।

खैर, यह कभी भी उस तरह से काम नहीं करता है। कोई भी विजेता इतना प्रभावशाली नहीं होता कि वह सब कुछ जीत सके। इसलिए, अंततः, साम्राज्य कई टुकड़ों में टूट जाता है।

इन्हें आमतौर पर चार के रूप में गिना जाता है। लिसिमाचस ने मैसेडोन के उत्तर में थ्रेस का क्षेत्र लिया, कैसैंडर ने मैसेडोन लिया, सेल्यूकस ने एशिया माइनर और मेसोपोटामिया का एक बड़ा हिस्सा लिया, यानी, आप जानते हैं, वहां का एक बड़ा हिस्सा, और टॉलेमी ने सीरिया और मिस्र लिया। खैर, यहूदी पृष्ठभूमि के लिए, केवल ये अंतिम दो, उत्तर में सेल्यूकस और दक्षिण में टॉलेमी, महत्वपूर्ण होंगे।

केवल वे दोनों ही एक समय या दूसरे समय में इजराइल पर हावी हो गए। खैर, यह हमें टॉल्मी राजवंश में लाता है, जो 30 ईसा पूर्व तक जारी रहा जब क्लियोपेट्रा ने आत्महत्या कर ली, लेकिन फिलिस्तीन पर केवल 301 ईसा पूर्व से 198 ईसा पूर्व तक नियंत्रण था। जबकि विभिन्न जनरल नियंत्रण के लिए लड़ रहे हैं, एक बिंदु ऐसा आता है जब एक पांचवां जनरल, जिसका हमने यहां उल्लेख नहीं किया है, जिसका नाम एंटीगोनस है, ऐसा लगता है कि वह पूरी चीज़ हासिल कर सकता है, लेकिन अन्य जनरलों ने उस पर हमला कर दिया। यदि आपने कभी युद्ध का खेल रिस्क खेला है, तो आपको पता होगा कि कभी-कभी एक व्यक्ति को खेल जीतने से रोकने के लिए इस तरह की चीज़ें करना आवश्यक होता है, और मूल रूप से जनरल यही करते हैं, और जब जनरल एंटीगोनस से लड़ रहे होते हैं, टॉलेमी चुपके से घुस जाता है और फिलिस्तीन को हड़प लेता है।

टॉलेमी को यहूदियों के साथ उचित रूप से अनुकूल व्यवहार के लिए जाना जाता है, दोनों फिलिस्तीन में और उन यहूदियों के साथ भी जो मिस्र में चले गए क्योंकि इस समय तक बड़ी संख्या में यहूदी अलेक्जेंड्रिया में बस गए थे। इसलिए, यहाँ-वहाँ अभी भी कुछ समस्याएँ हैं, लेकिन मूल रूप से यही स्थिति है, और यह लगभग एक सदी से भी ज़्यादा समय, 301 से 198 तक की है। सेल्यूसिड राजवंश इतना लंबा नहीं चला।

यह 63 ईसा पूर्व में रोम के अधीन हो गया, लेकिन इसने 198 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 160 तक फिलिस्तीन पर नियंत्रण किया। टॉलेमी के शासकों को हमेशा टॉलेमी कहा जाता है, और इतिहासकार आज उन्हें टॉलेमी I, II, III, IV, V कहते हैं, लेकिन प्राचीन काल में, उन सभी का एक

दूसरा उपनाम था, इसलिए टॉलेमी सोटर, टॉलेमी द सेवियर, अगर आप चाहें, तो ईसाई शब्दों में ठीक से नहीं समझा जाता है। टॉलेमी फैट्सो, यह एक और नाम था, शायद उनके चेहरे पर नहीं, लेकिन उनमें से कई नाम थे।

सेल्यूसिड शासकों के दो या तीन नाम थे जिन्हें आप आगे-पीछे घूमते हुए देख सकते हैं। उनमें से एक सेल्यूकस है, और उनमें से एक एंटीओकस है। युद्धों की लंबी श्रृंखला में, आखिरकार सेल्यूसिड्स और टॉलेमीज़ के बीच युद्ध हुए, और सेल्यूसिड्स ने आखिरकार टॉलेमीज़ से फिलिस्तीन हासिल कर लिया।

और फिर हम आगे बढ़ते हैं, मुझे नहीं पता, सेल्यूसिड्स के 6वें, 8वें, 9वें शासक का नाम एंटीओकस IV था, जिसे एंटीओकस एपिफेन्स के नाम से जाना जाता था। वह खुद को भगवान ज़ीउस का अवतार मानता था। यहूदी उसे एंटीओकस एपिफेन्स, सनकी या ऐसा ही कुछ, पागल कहते थे।

वैसे भी, वह हेलेनिस्टिक यहूदियों का पक्षधर था। रुकें और एक पल के लिए पीछे जाएँ। टॉलेमिक राजवंश ने मिस्र को नियंत्रित किया, जिसमें मुख्य रूप से मिस्र के लोग, कुछ यहूदी और अलेक्जेंड्रिया के अन्य लोग और फिर कुल मिलाकर यूनानी शामिल थे।

और आपके पास इतनी जातीय विविधता नहीं थी, जो एक बड़ी समस्या थी। लेकिन टॉलेमिक राजवंश में, सेल्यूसिड राजवंश में, जिसने एशिया माइनर और टिगरिस-यूफ्रेट्स नदी के नीचे और लगभग भारत तक इन सभी विभिन्न राष्ट्रियताओं को कवर किया, आपके पास थी। और इसलिए, सेल्यूसिड्स ने अपने साम्राज्य को एकीकृत करने की कोशिश में, उन सभी लोगों पर हेलेनिज्म थोपने की कोशिश की जो साम्राज्य के साथ सहयोग करना चाहते थे और अमीर बनना चाहते थे और इस तरह की चीजें।

इसलिए, जब एंटीओकस IV सेल्यूसिड शासक बना, तो उसने यरूशलेम में यहूदियों के बीच हेलेनिस्टिक गुट का पक्ष लिया। और वे, शायद कुछ हद तक उसकी चापलूसी करते हुए, यरूशलेम को एक हेलेनिस्टिक शहर के रूप में स्थापित करना चाहते थे, जिसका नाम एंटीओक होगा। और वह इसकी अनुमति देता है।

खैर, रूढ़िवादी यहूदियों के लिए ऐसा होना बहुत बड़ी आपदा है। हम समस्या पर वापस आएंगे क्योंकि इससे अंततः मैकाबीन विद्रोह होगा। एंटीओकस IV ने बाद में 168 ईसा पूर्व के आसपास यहूदी धर्म को खत्म करने का प्रयास किया।

और हम अपने अगले भाग में इस सब पर चर्चा करेंगे। तो, यह उस अंदरूनी लड़ाई का एक छोटा सा हिस्सा है जिसके कारण सिकंदर का साम्राज्य लगभग पूरे मध्य पूर्व में फैल गया। फिर उसकी मृत्यु के साथ यह टुकड़ों में टूट गया।

और फिर टुकड़े आपस में लड़ रहे थे, और खास तौर पर उत्तरी टुकड़ा, सेल्यूसिड्स, दक्षिणी टुकड़े, टॉलेमीज़ से लड़ रहे थे, इज़राइल, फिलिस्तीन, जो भी आप इसे कहना चाहें, पर नियंत्रण के लिए। इस समय अवधि की एक बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता, इज़राइल, यहूदी पृष्ठभूमि के

संबंध में, हेलेनिज़्म है। हेलेनिज़्म ग्रीक शब्द हेलास से आया है, जो ग्रीस के लिए ग्रीक का अपना नाम है।

हमारा नाम ग्रीस लैटिन से आया है और यह नाम रोमनों द्वारा इतालवी बूट के नीचे रहने वाले कुछ यूनानियों को दिए गए नाम से आया है। वे उन्हें ग्रीक कहते थे। खैर, मुझे यकीन नहीं है कि अंत कैसे होता है।

ग्रीकोस, मुझे लगता है। हेलेनिज़्म का मतलब ग्रीक जैसा होता है। और इसलिए, यह ग्रीक संस्कृति का नाम है क्योंकि यह सिकंदर के बाद पूर्व में विकसित हुई थी।

इसलिए, सीरियाई संस्कृति, यहूदी संस्कृति, मिस्र की संस्कृति आदि को ग्रीक बनाने का प्रयास, यदि आप चाहें तो हेलेनिज़्म होगा। खैर, जाहिर है कि इसका यहूदी धर्म पर महत्वपूर्ण प्रभाव था, इसलिए न्यू टेस्टामेंट के समय तक, हम टॉलेमी को एक बहुत ही पूरी तरह से हेलेनाइज्ड यहूदी के रूप में देखते हैं, जोसेफस को थोड़ा हेलेनाइज्ड यहूदी के रूप में, और यदि आप चाहें तो फिलो से आगे भी लोग थे। ऐसा प्रतीत होता है कि हेलेनिज़्म कुछ हद तक यहूदी धर्म से प्रभावित था, और इस पर कुछ बहस हुई है।

लेकिन हेलेनिज़्म की एक विशेषता वह थी जिसे धर्म के इतिहासकार समन्वयवाद कहते हैं। यह एक ग्रीक क्रिया से आया है जिसका अर्थ है मिश्रण। तो, समन्वयवाद एक ऐसी जगह है जहाँ दो, तीन या चार धर्म संपर्क में आते हैं, और उनके विचार एक दूसरे के साथ मिल जाते हैं।

पिछले दशक या सदी में हमारे आस-पास शायद सबसे ज़्यादा कम्युनिस्ट विचारधारा न्यू एज मूवमेंट रही है, जो ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म या हिंदू धर्म के बीच समन्वय है। अगर आप चाहें तो इनमें से हर एक तत्व को अपनाना इसका एक उदाहरण होगा। आप इसे आज लेबनान के बालबेक में सीरियाई मंदिर में देख सकते हैं, जहाँ मुझे 1975 या 6 में जब भी चीजें बिखरीं, उससे ठीक पहले जाने का मौका मिला। मैं 4 में वहाँ गया था। वह मंदिर बाल पूजा स्थल पर था, और यहीं से बालबेक नाम आया, जो बेका घाटी का बाल है।

लेकिन जब यूनानियों का आगमन हुआ, तो बाल देवता को ज़ीउस के रूप में फिर से पहचाना गया, और फिर जब रोमन आए, तो बाल देवता ज़ीउस को बृहस्पति के रूप में फिर से पहचाना गया, आदि, और इस तरह से यह सब चल रहा था। संभवतः यह दुनिया भर में आपके द्वारा देखे जाने वाले कुछ बहुदेववादों के लिए एक स्पष्टीकरण है, कि दो संस्कृतियाँ एक साथ आ गई हैं, एक में एक मुख्य देवी है, एक में एक मुख्य देवता है, और वे कुछ समझौता या कुछ करते हैं। हमें नहीं पता।

हम वहाँ नहीं थे और हमारे पास टाइम मशीन नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से, इतिहास में ऐसा कुछ हुआ है। खैर, यह स्पष्ट रूप से यहूदियों के लिए एक समस्या पैदा करने वाला है जब फिलिस्तीन में हेलेनिज़्म को धार्मिक तरीके से आगे बढ़ाया जाता है, और निश्चित रूप से ऐसे लोग हैं जो ऐसा करने के लिए तैयार हैं। बेशक, ग्रीस में दर्शन के विभिन्न स्कूल हैं, और उनका प्रभाव पूर्व में भी है।

हम, निश्चित रूप से, प्रेरितों के काम में पॉल को एथेंस के एरियोपैगस में बोलते हुए सुनते हैं, और एपिकुरियन और इस तरह के लोगों और स्टोइक के बारे में बात करते हैं, और जोसेफस फिलो स्टोइक और प्लेटोनिक प्रकार के विचारों से प्रभावित है, प्रारंभिक ईसाई, विशेष रूप से प्रारंभिक ईसाई दार्शनिक-धर्मशास्त्री स्टोइकवाद और इस तरह के विचारों से प्रभावित हैं। मैं आपको यहाँ उन दर्शनों का दौरा नहीं कराने जा रहा हूँ, लेकिन पूर्व में हेलेनिज़्म का बहुत प्रभाव राजनीतिक लाभ था कि जब सिकंदर के उत्तराधिकारियों ने इन सभी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया, तो वे मूल रूप से बहुत सारे मौजूदा शहरों को ग्रीक शहरों के रूप में फिर से स्थापित करने जा रहे थे, और एक ग्रीक शहर में जिन लोगों का प्रभाव था वे नागरिक थे। नागरिक केवल वे लोग नहीं थे जो शहर में रहते थे, हालाँकि उन्हें सामान्य रूप से ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी; वे ऐसे लोग थे जिन्हें किसी न किसी रूप में वोट देने का अधिकार था, जिन्हें शहर में कार्यालय आदि रखने का अधिकार था, और शहर में ऐसे बहुत से अन्य लोग भी थे जो केवल निवासी विदेशी थे, या गुलाम थे, या इस प्रकार के कुछ थे जो बहुत निचले स्तर के थे, आदि।

इसलिए, यदि आप एक यहूदी लड़के हैं और आप आगे बढ़ना चाहते हैं, और आप अलेक्जेंड्रिया में रह रहे हैं, या आप एंटीओक में रह रहे हैं, या ऐसा ही कुछ, तो कम से कम समाज में स्वीकार्य होने के लिए हेलेनिज़्म की जो भी विशेषताएँ आवश्यक हैं, उन्हें अपनाने का प्रलोभन होगा। इसलिए, हम देखते हैं कि यह चल रहा है। किसी तरह, उदाहरण के लिए, पॉल का परिवार रोमन नागरिक बन गया था, और वे पहले से ही तरसुस के नागरिक थे, इसलिए कहीं न कहीं, कई पीढ़ियों पहले, उसका परिवार तरसुस में नागरिकता पाने और फिर रोम में नागरिकता पाने के लिए काफी महत्वपूर्ण था।

और इसका कारण शायद यह था कि शायद वहाँ तम्बू बनाने वाले लोग थे और रोमियों को अपने अभियानों के लिए तम्बू बनाने वालों की ज़रूरत थी। मुझे नहीं पता कि यह कैसे हुआ होगा, लेकिन इसका असर ऐसा हुआ कि पॉल एक नागरिक के रूप में पैदा हुआ, जबकि यरूशलेम में सैन्य अधिकारी को अपनी नागरिकता खरीदनी पड़ी। जाहिर है उस समय यह उतना प्रतिष्ठित नहीं था।

इसलिए, हेलेनिज़्म बहुत महत्वपूर्ण है, और हम इसे पूरे हसमोनियन विद्रोह के संबंध में देखेंगे। इज़राइल में ग्रीक काल की एक और महत्वपूर्ण विशेषता बाइबिल का ग्रीक में अनुवाद है, जिसे हम बाइबिल का ग्रीक में सेप्टुआजेंट अनुवाद कहते हैं। यह संस्करण संभवतः 250 ईसा पूर्व के आसपास शुरू हुआ था, यानी सिकंदर द्वारा इस क्षेत्र पर कब्जा करने के एक सदी से भी कम समय बाद।

एरिस्टियास का पत्र कहते हैं, जो संभवतः उसके लगभग एक शताब्दी बाद का है, और यह हमें सेप्टुआजेंट की उत्पत्ति का वर्णन देता है। हमें यहाँ बताया गया है कि मिस्र में ग्रीक लोगों के दूसरे शासक टॉलेमी द्वितीय, जो सिकंदर की मृत्यु के बाद मिस्र पर नियंत्रण करने आए थे, दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी बनाना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने अपने लाइब्रेरियन के लिए इस व्यक्ति को लिया, और लाइब्रेरियन ने उन्हें बताया कि वे लाइब्रेरी में रखने के लिए सभी प्रकार की कृतियाँ एकत्र करने का प्रयास कर रहे हैं, और लाइब्रेरियन ने कहा, ठीक है, हमारे पास यहूदियों के कानून की एक प्रति होनी चाहिए।

जाहिर है, कहानी के अनुसार, कम से कम, उस समय ग्रीस में यह मौजूद नहीं था, इसलिए टॉलेमी ने 72 यहूदी बुजुर्गों को लाने के लिए यरूशलेम में प्रतिनिधियों को भेजने के लिए धन दिया, जो मिस्र आकर कानून का अनुवाद करेंगे। इसलिए, कहानी में बताया गया है कि वे नीचे आए, और उन्होंने कानून का अनुवाद किया, और इसका परिणाम सेप्टुआजेंट अनुवाद था। हालाँकि, समय बीतने के साथ कहानी और भी बेहतर हो जाती है।

कहानी में बाद में कुछ जोड़ यह है कि अनुवाद पूरे पुराने नियम को कवर करता है, हालाँकि वास्तव में, जैसा कि अरिस्टेयस के पत्र में कहा गया है, यह इसे यहूदी कानून कहता है, और यह थोड़ा पेचीदा है क्योंकि कानून शब्द का अर्थ पूरे पुराने नियम से हो सकता है, या इसका मतलब सिर्फ टोरा, पेंटाटेच हो सकता है, अगर आप चाहें। बाद में एक जोड़ जो निश्चित रूप से अरिस्टेयस के पत्र में दिखाई दिया होगा, अगर यह सच होता, तो अनुवादक 36 जोड़ों में विभाजित हो गए और स्वतंत्र रूप से काम किया, और उन्होंने पुराने नियम की कहानी के 36 समान संस्करण तैयार किए, जो संभवतः इस विचार के पीछे है कि कई लोगों के पास यह था कि अनुवाद स्वयं एक प्रेरित अनुवाद था। कहानी के विवरण, और विशेष रूप से बाद में जोड़ी गई बातों के बारे में कुछ संदेह है, लेकिन आज कहानी के बारे में आम राय यह है कि ग्रीक में अनुवाद जिसे हम सेप्टुआजेंट कहते हैं, जाहिर तौर पर अलेक्जेंड्रिया में किया गया था, जहां कहानी इसे रखती है, और पेंटाटेच, मूसा की पांच पुस्तकों, को एक इकाई के रूप में अनुवादित किया गया प्रतीत होता है और संभवतः 250 ईसा पूर्व के आसपास हुआ था, इसलिए हमें इसमें एक बहुत ही एकीकृत शैली मिलती है, और वहां विभिन्न अनुवाद मामलों को संभालने का तरीका, जो कि पुराने नियम के अन्य ग्रीक भागों में से कई के मामले में नहीं है।

हो सकता है कि ये स्कॉल यरुशलम से आए हों, और संभवतः अनुवादक भी, और इसका संबंध पुराने नियम के पाठ के बारे में कुछ विवरणों से है जो पुराने नियम के बेबीलोन-प्रकार के संस्करण और यरुशलम संस्करण और सामरी संस्करण और उस तरह की चीजों के बारे में मामलों को हल करते हैं। और तिथि 250 को देखते हुए, संभवतः टॉलेमी द्वितीय ने काम की अनुमति दी थी, और उसने इसमें सहायता की होगी, इसलिए हम फिर से बिना किसी समय मशीन के स्थिति में हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि कहानी का कम से कम एक बड़ा हिस्सा सच है। बाइबल का सेप्टुआजेंट अनुवाद कई कारणों से बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्राचीन काल में ज्ञात किसी भी प्राचीन लेखन का सबसे लंबा अनुवाद है, जो कि काफी आश्चर्यजनक है। यह पुराने नियम के पाठ को पुराने नियम के अधिकांश भाग से हमारे पास मौजूद सबसे पुराने हिब्रू पाठ से लगभग एक सदी पहले प्रस्तुत करता है। इसने नए नियम के साथ-साथ पुराने नियम में इस्तेमाल किए जाने वाले यूनानी धर्मशास्त्रीय शब्दों के लिए पैटर्न निर्धारित किया, पुराने नियम को उस समय भूमध्यसागरीय दुनिया की सार्वभौमिक भाषा में रखा, कम से कम उस समय पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया की, और यह प्रारंभिक चर्च का पुराना नियम बन गया।

जाहिर है, एक बार जब सुसमाचार इजरायल से बाहर काफी हद तक फैल गया, तो अधिकांश लोग मूल हिब्रू भाषी नहीं थे। क्या हम समय पर काम कर रहे हैं? ठीक है। हम यूनानियों के

अधीन फिलिस्तीन से लेकर हस्मोनियों के अधीन यहूदी स्वतंत्रता तक लगभग एक सदी नीचे 160 ईसा पूर्व से 63 ईसा पूर्व तक आगे बढ़ते हैं।

हम फिर से एंटिओक IV, एंटिओक की एपीफेनीज़ और उजाड़ के घृणित कार्य से शुरू करते हैं। एंटिओकस IV वास्तव में 175 ईसा पूर्व में अपने नाबालिग भतीजे से सिंहासन छीनकर सिंहासन पर आया था। उसने हेलेनिज़्म के माध्यम से इस विविध साम्राज्य को एकीकृत करने के लिए पहले के सेल्यूसिड्स की तुलना में और भी अधिक प्रयास किया, इसलिए उसने यरूशलेम में हेलेनिस्टिक यहूदियों का पक्ष लिया, और उन्होंने यरूशलेम को एंटिओकिया के रूप में फिर से स्थापित किया, या जिसे हम आज एंटिओक कहते हैं।

वह रूढ़िवादी उच्च पुजारी, ओनियास III नामक व्यक्ति को पदच्युत कर देता है, ओनियास के भाई जेसन के लिए जो हेलेनिज़्म के लिए अधिक अनुकूल था और इससे निश्चित रूप से कुछ समस्याएं पैदा हुईं, लेकिन उन समस्याओं के आस-पास भी नहीं जो तब पैदा हुईं जब उसने बाद में जेसन को मेनेलॉस के लिए पदच्युत कर दिया जो उच्च पुजारी परिवारों में नहीं था, जाहिर तौर पर एक पुजारी था, जिसने पद पाने के लिए एंटिओकस को रिश्वत दी थी। मेनेलॉस ने एक बड़ी कीमत की पेशकश की थी, लेकिन जैसा कि पता चला, विडंबना यह है कि जेसन को पदच्युत करने के बाद वह पैसे जुटाने में सक्षम नहीं था। लेकिन मुझे लगता है कि बिना भुगतान की गई रिश्वत पर निर्भर रहने का यही खतरा है।

इस बीच, एंटिओकस मिस्र में लड़ाई कर रहा है ताकि साम्राज्य के टॉलेमी पक्ष पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर सके। एंटिओकस, उन लोगों की तरह जो इन दो बड़े टुकड़ों को नियंत्रित करते हैं, दूसरे बड़े टुकड़े को लेने और सिकंदर के पास जितना साम्राज्य होता, उतना ही साम्राज्य पाने की इच्छा रखता था। इसलिए, वह मिस्र में जाता है और 168 ईसा पूर्व में, ऐसा लगता है कि जब रोमन दिखाई देंगे तो वह टॉलेमी को हरा देगा।

और एक रोमन साथी जो एंटिओकस को बचपन से नहीं, बल्कि किशोरावस्था से जानता था, मुझे लगता है कि वे दोनों उस समय रोम में बंधक थे, एंटिओकस के पास आकर कहते हैं, रोमन सीनेट का कहना है कि आपको मिस्र से बाहर निकलकर घर वापस जाना चाहिए। और एंटिओकस कहता है कि मैं इसके बारे में सोचूंगा। रोमन ने अपना डंडा निकाला और एंटिओकस के चारों ओर रेत पर एक घेरा बनाया और कहा, जब तक तुम इसके बारे में सोचो, वहीं खड़े रहो।

इसलिए, एंटिओकस पीछे हट जाता है, और वह खुश नहीं है क्योंकि वह मिस्र से बाहर आ रहा है, अगर आप चाहें तो रोमनों से भयभीत हो चुका है। और उसे पता चलता है कि इज़राइल में विद्रोह चल रहा है, और वह उस क्षेत्र में चला जाता है। अर्थात्, यह जेसन है जिसने मेनेलॉस के खिलाफ विद्रोह किया है, आदि। और इसलिए एंटिओकस IV ने यहूदी धर्म को नष्ट करने की कोशिश करने का फैसला किया।

वह खतना करने से मना करता है, वह कोषेर खाद्य कानूनों का पालन करने से मना करता है, वह धर्मग्रंथों को नष्ट करने की कोशिश करता है, वह मंदिर को ज़ीउस को फिर से समर्पित करता है, और वह खुद को, आपको याद होगा, ज़ीउस का एक रूप मानता है, एक मूर्ति स्थापित करता है

जो शायद खुद से मिलती जुलती हो। हमारे पास मूर्ति की कोई तस्वीर नहीं है, और हम ठीक से नहीं जानते कि एंटीओकस कैसा दिखता था। यह वह बात है जिसे हम मैकाबीन विद्रोह कहते हैं।

तो, हम 167 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 134 ईसा पूर्व तक मैकाबीन विद्रोह पर नज़र डालते हैं। खैर, सेल्यूसिड्स ने इज़राइल में अपना विरोध कम कर दिया है, उन्हें लगता है, और सरकार, सेल्यूसिड सरकार, फिर यहूदिया के सभी शहरों में जाकर एंटीओकस के आदेशों को लागू करने और मूर्तिपूजक बलिदान का आदेश देने के लिए अधिकारियों को भेजती है। जब वे मोदीन के छोटे से गाँव में पहुँचते हैं, तो वहाँ एक बूढ़ा पुजारी, मथाथियास, होता है।

पूरे गांव को बुतपरस्त बलि चढ़ाने के लिए बाहर लाया जाता है, और गांव के यहूदियों में से एक बलि चढ़ाना शुरू करता है, और यह बूढ़ा पुजारी, मथाथियस, उस आदमी को मार देता है। खैर, ऐसा करना बहुत ही विनाशकारी बात होगी, सिवाय इसके कि अधिकारी और उसके सैनिकों की तुलना में वहाँ अधिक ग्रामीण हैं, और इसलिए वे अधिकारी और सैनिकों को मार देते हैं, और स्वाभाविक रूप से, यह बात मुख्यालय तक काफी जल्दी पहुँच जाएगी, और इसलिए मथाथियस और उसके पांच बड़े बेटे सशस्त्र प्रतिरोध का आह्वान करते हैं और पहाड़ों, गुफाओं आदि में भाग जाते हैं। विद्रोह की उत्पत्ति यहीं से हुई।

यह हमें मथाथियस के बेटों में से एक, यहूदा की ओर ले जाता है। मथाथियस के तीसरे बेटे का एक सैन्य नाम था, मैकाबी, जिसका अर्थ है हथौड़ा या हथौड़ा, इसलिए स्टोनवेल जैक्सन या उस तरह का कुछ या टिप्पेकेनो या उन सैन्य नामों में से एक जैसा जो कभी-कभी जनरलों को मिलते हैं। खैर, यहूदा फिर एक सैन्य अभियान का नेतृत्व करता है और घात लगाने की तकनीकों और इलाके को इस तरह से जानकर इसे प्रबंधित करता है कि सेल्यूसिड्स कई सेल्यूसिड सेनाओं को नष्ट न कर दें। सेल्यूसिड्स मूल रूप से एक बिल्डअप के संदर्भ में काम कर रहे हैं, और वे अपनी ज़रूरत से ज़्यादा सैनिकों को नहीं भेजना चाहते हैं, लेकिन वे हमेशा कम आंकते हैं कि उन्हें कितने की ज़रूरत है, इसलिए जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे निर्माण करते हैं, यहूदा सफल होता है, और जैसे-जैसे यहूदा सफल होने लगता है, अधिक से अधिक यहूदी उसके मानकों पर आते हैं।

इसलिए, यहूदा की सेना सफलता के साथ बढ़ती है, और वे सेल्यूसिड वृद्धि से मेल खाते हैं। अंत में, हम उन्हें मैकाबीज़ कहेंगे, यहूदा के अनुयायी, जो गढ़, मुख्य किले को छोड़कर यरूशलेम पर कब्जा कर लेते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में एंटोनिया किला है जिसे आप न्यू टेस्टामेंट टाइम मैप्स में देखेंगे, लेकिन यह उसका पूर्ववर्ती है।

वे यरूशलेम पर कब्जा कर लेते हैं, बचे हुए सेल्यूसिड्स और कुछ हेलेनिस्टिक यहूदियों को गढ़ में बंद कर देते हैं, वे मंदिर को साफ करते हैं, याद करते हैं कि यह कुछ समय के लिए ज़ीउस की पूजा का स्थल था, और वे मंदिर को फिर से समर्पित करते हैं और यह दिसंबर 164 ईसा पूर्व में होता है और यह हनुक्का, समर्पण के पर्व की उत्पत्ति बन जाता है। इस बीच, 163 में एंटीओक IV की मृत्यु हो जाती है, और लिसियस उस व्यक्ति के लिए रीजेंट के रूप में कार्यभार संभालता है जो बूढ़ा होने पर राजा बनने वाला है। लिसियस इस चीज़ से बाहर निकलना चाहता था, इसलिए उसने शांति की शर्तें पेश कीं जो कुछ बहुत ही पवित्र यहूदियों को स्वीकार्य थीं, हालाँकि मैकाबीज़ को नहीं और इस तरह विपक्ष को अपने खिलाफ़ कर लिया। इसलिए कुछ ही साल बाद,

सेल्यूसिड सेना वापस आ गई, और यहूदा और उसकी सेनाएँ, जो संख्या में बहुत कम थीं, 160 ईसा पूर्व में युद्ध में मारे गए।

खैर, मत्तियास के बच्चों का अंत यहीं नहीं हुआ। यहूदा तीसरा बेटा था और पाँच में से अभी भी दो बेटे बचे हैं। बाकी दो पहले ही मर चुके हैं।

इनमें से एक जोनाथन है, जो 160 से 142 तक इसराइल का शासक बनेगा, और दूसरा साइमन है, जो 142 से 134 तक शासक बनेगा। इस समय तक, सेल्यूसिड साम्राज्य एंटीओकस के बाद उत्तराधिकार के सवाल पर विभाजन के कारण कमजोर हो चुका है, और इसलिए यहूदा और साइमन, बदले में, कूटनीति द्वारा ताकत हासिल करने में सक्षम हैं जब तक कि यहूदा, यहूदिया की भूमि, वस्तुतः स्वतंत्र नहीं हो जाती। यह पता चलता है कि 142 ईसा पूर्व में जोनाथन और 134 ईसा पूर्व में साइमन दोनों की विरोधियों द्वारा हत्या कर दी गई थी, लेकिन इससे पहले साइमन को वंशानुगत पुजारी और अपने परिवार के लिए इसराइल का शासन प्राप्त नहीं हुआ था।

साइमन की मृत्यु के बाद, उसका बेटा शासन करने लगा, और इसलिए जब आपके पास लगातार दो पिता-पुत्र की जोड़ी शासन करती है, तो उसे राजवंश के रूप में गिना जा सकता है। मैं शायद इसे जोनाथन से पहले ही गिन सकता था, लेकिन हसमोनियन राजवंश को आम तौर पर 134 ईसा पूर्व से 63 ईसा पूर्व तक माना जाता है। पहला आदमी साइमन का बेटा है, जिसका नाम थोड़ा अधिक जटिल है, जॉन हिरकेनस, और उसने 134 से 104 ईसा पूर्व तक शासन किया।

बहुत सफल। सेल्यूसिड राजवंश कमजोर हो गया, और जॉन सैन्य रूप से काफी मजबूत हो गया।

वह यहूदिया के इलाके का बहुत विस्तार करने में सक्षम है। इसलिए, वह उन तटीय शहरों को उठाता है जो यहूदियों से बहुत पहले ही खो चुके थे। याद रखें, जब वे बेबीलोन की कैद से वापस आए, तो वे मूल रूप से यरूशलेम आदि के आसपास के पहाड़ी इलाकों में बस गए।

इसलिए, वह तटीय शहरों पर कब्जा कर लेता है, और वह दक्षिण में एदोमियों के इदुमिया और उत्तर में सामरिया के सामरिया क्षेत्र पर कब्जा कर लेता है। इसलिए, यह इस समय एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। अपने शासनकाल के दौरान, 30 साल, हम पहली बार जोसेफस में फरीसियों और सद्दूकियों के बारे में सुनते हैं। फरीसी जाहिर तौर पर शुरू में इसके पक्ष में थे, लेकिन उन्होंने एक सुझाव दिया जो पीसी नहीं था, अगर आप चाहें तो यह सुझाव देकर कि जॉन को उच्च पुजारी पद से इस्तीफा दे देना चाहिए क्योंकि उसकी माँ ने उसे बंदी रहते हुए जन्म दिया था।

इस बात पर सुझाव कि वह वैध था या नहीं। उसने इसके बजाय सद्दूकियों के साथ जाने का फैसला किया। इसलिए, उस समय सद्दूकियों की पार्टी एक तरह से बन गई और वे न्यू टेस्टामेंट के समय तक भी बंद और बंद रहेंगे।

खैर, 104 में, वह मर जाता है, और उसका एक बेटा एरिस्टोबुलस होता है, और वह लगभग एक साल तक राज करता है। मुझे लगता है कि उसने सिंहासन पर अपनी पकड़ मजबूत करने के

लिए कई भाइयों को भी मार डाला। मुझे डर है कि इस तरह की स्थितियों में यह असामान्य नहीं है।

और वह राजा की उपाधि लेता है। तो, यहूदा से अगर आप चाहें तो वह सिर्फ एक जनरल है। जोनाथन अगर आप चाहें तो एक जनरल है।

साइमन न केवल एक जनरल है, बल्कि वह उच्च पुजारी भी है। भले ही वह पुजारी परिवार से संबंधित है, लेकिन अगर आप चाहें तो वह उच्च पुजारी वंश में नहीं है। लेकिन अब, अरिस्टोबुलस राजा की उपाधि लेता है, और उसका उत्तराधिकारी उस उपाधि से इस्तीफा नहीं देता है। लेकिन अरिस्टोबुलस लंबे समय तक नहीं टिकता।

वह एक साल के भीतर ही डर के कारण मर जाता है। उसने शराब के नशे में अपने सभी भाइयों की हत्या कर दी और शायद किसी तरह की बीमारी के कारण भी। उसका एक भाई अभी भी जीवित है, जो जेल में था, और इसलिए जब अरिस्टोबुलस की मृत्यु होती है, तो अरिस्टोबुलस की विधवा अपने इस भाई, अलेक्जेंडर को जेल से रिहा कर देती है और उससे शादी कर लेती है।

तो, जॉन हिरकेनस की विधवा और जॉन हिरकेनस के भाई एरिस्टोबुलस फिर शाही जोड़ी बन गए, अगर आप चाहें तो। और इसलिए, अलेक्जेंडर जननेयस, फिर, छोटे भाई का नाम है जिसने 102 से 76 ईसा पूर्व तक शासन किया। उसने राज्य का विस्तार तब तक जारी रखा जब तक कि यह डेविड सोलोमन के राज्य जितना बड़ा नहीं हो गया।

तो, यहाँ हम एक बहुत शक्तिशाली स्थानीय राज्य प्राप्त कर रहे हैं जो वास्तव में सेल्यूसिड साम्राज्य से बना है, जो इस समय बिखर रहा है। उसके शासनकाल के दौरान, फरीसियों ने उसके खिलाफ विद्रोह किया और सीरियाई लोगों को बुलाया, जो सेल्यूसिड के अवशेष थे, ताकि वे आकर मदद कर सकें। और जब फरीसियों को दूसरे विचार आते हैं तो सिकंदर हारने वाला होता है।

क्या यह बेहतर होगा कि सीरियाई, सेल्यूसिड्स, क्षेत्र पर नियंत्रण रखें ताकि वे फिर से वापस आ जाएं? खैर, सिकंदर जीत जाता है लेकिन आखिरकार फरीसियों के बारे में उसकी भावनाएँ मिश्रित हैं। हाँ, अगर वे वापस नहीं आते, तो वह शायद हार जाता, लेकिन अगर वे पहले ही विद्रोह नहीं करते, तो वह कभी भी समस्या में नहीं पड़ता, इसलिए उसने फरीसियों के एक समूह को सूली पर चढ़ा दिया। खैर, वह 76 ईसा पूर्व में मर गया, और उसकी पत्नी, जो एरिस्टोबुलस की पत्नी थी, और फिर उसकी पत्नी 75 से 67 तक की छोटी अवधि के लिए शासक रानी बनी।

उसका नाम सैलोम एलेक्जेंड्रा है और वह सफल है। उसके दो बेटे हैं और उनका नाम हिरकेनस II है। जॉन हिरकेनस का नाम हिरकेनस I और एरिस्टोबुलस II होगा।

हिरकेनस दोनों में से अधिक सौम्य और वृद्ध है, और उसे उच्च पुजारी बनाया गया है क्योंकि सलोमी उच्च पुजारी नहीं हो सकती और अरिस्टोबुलस को सैन्य कमान दी गई है। दुर्भाग्य से, अरिस्टोबुलस एक ऐसा व्यक्ति है जो बहुत, हम कहते हैं, महत्वाकांक्षी है, और वह शासन करना

चाहता है। जब 66 में सलोमी एलेक्जेंड्रा की मृत्यु हुई, तो हम उस महत्वपूर्ण घटना पर पहुँचे जिसने हसमोनियन स्वतंत्रता के अंत की ओर अग्रसर किया।

वह मर जाती है। उसके बाद हिरकेनस द्वितीय आता है, जिसे फरीसियों का समर्थन प्राप्त है, लेकिन सद्कियों के समर्थन से अरिस्टोबुलस द्वितीय उससे सिंहासन छीन लेता है। हिरकेनस एक पड़ोसी देश में भाग जाता है, गृहयुद्ध शुरू कर देता है और सहायता के लिए रोमनों को बुलाता है। इस समय, मध्य पूर्व में रोमन मजबूत हो रहे हैं। अगर आपको निकट पूर्व पसंद है, तो मुझे लगता है कि हम इसे कॉल करेंगे, और वे आने और मदद करने के लिए उत्सुक हैं।

खैर, इससे पहले कि हम उस पर आगे बढ़ें, हम वापस आते हैं और इस समय अवधि की कुछ विशेषताओं को देखते हैं और उनमें से एक महत्वपूर्ण है तीन समूह जिनके बारे में हम जोसेफस और नए नियम में सुनते हैं - फरीसी और सद्की जिनके बारे में हम दोनों में सुनते हैं और एसेन जिनके बारे में हम केवल जोसेफस सामग्री में सुनते हैं। इन तीन समूहों की उत्पत्ति कुछ हद तक अस्पष्ट है लेकिन तीनों जाहिर तौर पर इस अवधि के दौरान उभरे हैं, जो कि मैकाबीन काल है, यानी 168 से 63 शताब्दी या उससे भी अधिक। फरीसी और एसेन जाहिर तौर पर बहुत ही पवित्र समूह से उभरे हैं जो मैकाबीन विद्रोह में यहूदा के साथ शामिल हुए थे, एक समूह जिसे हम हसीदीम कहते हैं।

हसीद एक संज्ञा है जो वाचा के प्रति वफादार है। आप इसे हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट हेसेड में नियमित रूप से देखेंगे, जो ईश्वर के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण से, वाचा के प्रति वफादारी का अर्थ है, और ईश्वर के मनुष्यों के दृष्टिकोण से, इसका अर्थ वाचा के प्रति वफादारी भी है, लेकिन यह उस तरह की दयालुता या दया के रूप में सामने आता है क्योंकि वाचा एक दयालु वाचा है, न कि कुछ ऐसा जिसे मनुष्य ईश्वर के साथ चर्चा में या उस तरह की किसी चीज़ में शामिल करते हैं। खैर, फरीसियों, सद्कियों और एसेनियों के बारे में थोड़ा सा। आइए सबसे पहले उनके धर्मशास्त्र को देखें। हमें लगता है कि एसेन नाम हसीद से आया है, ठीक है? समस्या यह है कि ग्रीक में वास्तव में कठोर एच ध्वनि नहीं है, इसलिए बहुत सी चीज़ें खो जाती हैं। तो, हिब्रू में, आपको हल्लेलुयाह मिलता है, और ग्रीक में, आपको एलेलुइया मिलता है, आदि। इसलिए, हमें लगता है कि इस बात पर बहस है कि यह कहाँ से आता है, इसलिए यदि यह सही है, तो एसेन वफादार लोग हैं, ठीक है। वे वही हैं जिन्हें हम सुपर फरीसी कह सकते हैं। ठीक है, उन्होंने फरीसी को बेहतर तरीके से समझा, और वास्तव में, उन्होंने फैसला किया कि मंदिर वास्तव में उन लोगों द्वारा शासित था जो पर्याप्त रूप से रूढ़िवादी नहीं थे, इसलिए वे अब मंदिर के साथ खिलवाड़ नहीं करेंगे।

एक महान कालभ्रम में, हम कह सकते हैं कि ईश्वर की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के संबंध के बारे में उनका दृष्टिकोण कैल्विनवादी है। ठीक है, मैं समझता हूँ कि उस समय यह शब्द अस्तित्व में नहीं था। पुराने नियम में अधिकार के स्रोत हैं, लेकिन कुछ गुप्त पुस्तकें हैं, और हमें लगता है कि अब हम जानते हैं कि कुछ गुप्त पुस्तकें क्या हैं। वे मैनुअल डिसिप्लिन, हनोक की पुस्तक और जुबली की पुस्तक जैसी चीज़ें होंगी। उनमें से कुछ प्रकार के कार्य संभवतः उस श्रेणी में आते हैं। हमें यकीन नहीं है कि उत्तरजीविता के बारे में उनका दृष्टिकोण क्या है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे पुनरुत्थान में विश्वास करते थे, जो बहुत आश्चर्यजनक नहीं होगा। कुछ लोग सोचते

हैं कि वे आत्मा की अमरता में विश्वास करते थे लेकिन पुनरुत्थान में नहीं, इसलिए मैंने यहाँ अपने नोट्स में उस प्रश्न पर एक प्रश्न चिह्न लगाया है।

उनका स्वर्गदूतों पर बहुत ज़ोर था, और ऐसा लगता है कि यह हनोक और जुबली से आया है, जहाँ हमें कई अन्य स्वर्गदूतों के नाम और उनकी गतिविधियों का कुछ इतिहास मिलता है, जो मिल्टन के पैराडाइज़ लॉस्ट जितना विस्तृत नहीं है, लेकिन फिर भी वहाँ काफी जानकारी है, और उनका एस्केटोलॉजी पर बहुत ज़ोर था। इनकी तुलना फरीसियों से करें। हमें लगता है कि उनका नाम पैराश, सेपरेट से आया है, ठीक है? इसलिए वे अलगाववादी थे, वास्तव में एसेन की तुलना में अलगाववादी नहीं थे क्योंकि उन्होंने समाज को नहीं छोड़ा था, लेकिन अनुष्ठान शुद्धता और कानून के बारे में एक बाड़ बनाने पर बहुत जोर दिया था, विचार यह था कि यदि आप नहीं चाहते कि लोग आपके खेतों में चलें, तो आप उस चीज़ के चारों ओर एक बाड़ लगाते हैं जिससे वे अंदर न आ सकें, इसलिए यदि हम नहीं चाहते कि लोग कानून का उल्लंघन करें तो हम कुछ अतिरिक्त कानून बनाते हैं जो इसे बाहरी क्षेत्र में रखते हैं ताकि आपको सब्ज से आधे घंटे पहले काम बंद करना पड़े या इस तरह की चीज़ें ऐसी श्रेणियां होंगी जो कानून के इर्द-गिर्द बाड़ लगाने की प्रवृत्ति में आती हैं। संप्रभुता और जिम्मेदारी पर उनका दृष्टिकोण भी वही है जिसे हम आज केल्विनवादी कहते हैं।

यदि आप चाहें तो रहस्योद्घाटन के स्रोतों पर उनका दृष्टिकोण पुराना नियम और मौखिक परंपरा होगा, ठीक है? इसलिए उनका मानना था कि मूसा ने उस समय बहुत सी अन्य जानकारी दी थी, और वह एक मौखिक परंपरा थी, इसलिए उस अर्थ में, वे कैथोलिक धर्म से कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं, जो कि बाइबिल और चर्च की परंपरा है, या यहां तक कि पोप के कथन भी स्पष्ट रूप से फरीसियों के पास पोप के बराबर कोई व्यक्ति नहीं था, यदि आप चाहें तो फरीसी निश्चित रूप से पुनरुत्थान में विश्वास करते थे, ठीक है, एसेन के बारे में इतना निश्चित नहीं है, फरीसी निश्चित रूप से करते थे, वे निश्चित रूप से स्वर्गदूतों में विश्वास करते थे, लेकिन कम से कम हम नामों और बहुत सारे स्वर्गदूतों या उस तरह की किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सुनते हैं, इसलिए ऐसा नहीं लगता कि उन पर एसेन जितना ज़ोर दिया गया था और वे भी परलोक विद्या में विश्वास करते थे, लेकिन उनका ज़ोर अंतिम निर्णय पर अधिक था, न कि वहाँ क्या हो सकता है, इसके विवरण पर।

खैर, यह हमें सदूकियों तक ले आता है। इस बारे में कुछ तर्क हैं कि नाम कहाँ से आया; संभवतः सबसे आम दृष्टिकोण यह सुझाव है कि यह हिब्रू त्ज़ेडेक धर्मों से आया है। वे धर्मों लोग थे। जब अधिकांश समूह अपने समूह के लिए नाम चुनते हैं, तो अधिकांश नाम अनुकूल होते हैं, ठीक है? इसलिए हम मॉर्मन को मॉर्मन कहते हैं, आप जानते हैं, लेकिन वे खुद को चर्च ऑफ जीसस क्राइस्ट ऑफ लैटर-डे सेंट्स कहते हैं। हम दूसरे समूह को केकर कहते हैं। वे खुद को फ्रेंड्स सोसाइटी ऑफ फ्रेंड्स कहते हैं, ठीक है? इसलिए, आमतौर पर, समूह का अपना नाम अधिक अनुकूल होता है। कुछ लोग सोचते हैं कि शायद यह सादोक से आया है, लेकिन पता नहीं सदूकी फरीसियों से भी अधिक व्यावहारिक थे और कुछ हद तक समझौता करने वाले थे, और इस तरह, वे जो भी शक्तियां थीं, उनके साथ काम करने में सक्षम थे, इसलिए वे रोमन सरकार आदि के साथ बेहतर तरीके से मिल गए। हम सोचते हैं कि ईश्वर की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के संदर्भ में हमें फरीसियों को आर्मिनियन कहना होगा, ठीक है? मानवीय जिम्मेदारी और

मानवीय स्वतंत्रता आदि पर बहुत जोर दिया गया है। रहस्योद्घाटन का स्रोत क्या था? मेरा मानना है कि मूल का दावा है कि वे केवल पेंटाटेच को मानते थे, लेकिन हमारे पास जो साक्ष्य हैं, वे संपूर्ण नियम को अधिक इंगित करते हैं, और वे फरीसियों की मौखिक परंपरा के प्रति संदिग्ध थे, इसलिए कम से कम किसी अन्य परंपरा में किसी भी चीज के प्रति, और शायद वे एस्सेन की गुप्त पुस्तकों में भी रुचि नहीं रखते थे और मुझे लगता है कि शायद यह हमारे पास मौजूद साक्ष्य से बेहतर ढंग से मेल खाता है।

पुनरुत्थान के सवाल के बारे में क्या? नया नियम हमें बताता है कि वे पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन हमें यह नहीं बताता कि वे किसमें विश्वास करते थे। जोसेफस कहते हैं कि वे किसी भी जीवित रहने में विश्वास नहीं करते। जब आप मर जाते हैं, तो आप अब अस्तित्व में नहीं रहते।

और यह वास्तव में इस पूरे पुनरुत्थान के सवाल पर यीशु के जवाब से बेहतर तरीके से मेल खाता है, बजाय इस विचार के कि वे आत्मा की अमरता या उस तरह की किसी चीज़ में विश्वास करते हैं। वे स्पष्ट रूप से स्वर्गदूतों में विश्वास नहीं करते थे, और हम ठीक से नहीं जानते कि इसका क्या मतलब था क्योंकि हमारे पास उनका कोई लेखन नहीं है। ठीक है, क्या इसका मतलब यह था कि वे मानते थे कि स्वर्गदूत आज नहीं दिखाई देते हैं या कुछ और, या क्या वे मानते थे कि वे कभी नहीं थे, और कुछ और स्पष्टीकरण है।

तो, आप कह सकते हैं, अगर वे पुराने नियम में विश्वास करते थे तो वे स्वर्गदूतों में विश्वास कैसे नहीं कर सकते थे? खैर, धर्मशास्त्री उदारवादी और प्रोटेस्टेंट बहुत सी चीजों में विश्वास कर सकते हैं या बहुत सी चीजों में विश्वास नहीं कर सकते हैं, जिनके बारे में बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि वे हैं या नहीं हैं, और वे उस तरह से नहीं चलते हैं। परलोक विद्या पर जोर। नहीं, सद्कियों का मानना था कि चूंकि आप मरने के बाद अस्तित्व में नहीं रहते, इसलिए कोई न्याय नहीं होता।

न्याय इसी जीवन में है। यदि आप समृद्ध हैं, तो ईश्वर आपके अनुकूल है, और इसलिए वे उच्च वर्ग, धनी लोगों आदि की ओर आकर्षित होते हैं और उनकी ओर आकर्षित होते हैं। खैर, यह इन तीन समूहों का धर्मशास्त्र है जो धर्मशास्त्र को व्यापक अर्थ में ले जाता है।

उनके प्रभाव और अस्तित्व के बारे में क्या? जहाँ तक हम जानते हैं, वहाँ बहुत सारे एसेन नहीं थे, और वे समाज से अलग-थलग रहते थे, इसलिए जाहिर है कि वे उतना प्रभाव नहीं डाल पाए। दूसरी ओर, फरीसी लोकप्रिय थे, लेकिन वास्तव में एक बड़ा समूह नहीं थे, इसलिए वे बस एक बहुत प्रभावशाली समूह थे। सद्की निश्चित रूप से फरीसियों से छोटे थे और शायद एसेनियों से भी छोटे थे, लेकिन वे सबसे अमीर लोग थे और ऐसे ही थे।

एसेन, समाज से अलग-थलग होने के कारण राजनीति से भी अलग-थलग हो गए थे। फरीसियों का कुछ राजनीतिक प्रभाव था, लेकिन वे धार्मिक रूप से प्रमुख थे। जोसेफस हमें बताता है कि चीजों को पढ़ने का उनका तरीका लोगों के चलने का तरीका था, और सद्कियों ने इसका बहुत अधिक विरोध करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी।

हालाँकि, सद्दूकी राजनीतिक रूप से प्रभावशाली थे, उन्हें एहसास था कि इसका मतलब है कि वे रोमनों के अधीन थे, इसलिए वे अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते थे। एसेनियों का प्रभाव और अस्तित्व: उन्होंने डेड सी स्क्रॉल लिखे या उनकी नकल की, इसलिए 1948 में जब वे यहाँ प्रसिद्ध हुए तो उनका प्रभाव फिर से बढ़ गया, लेकिन कुछ सबूत हैं कि उनके कुछ स्क्रॉल शुरुआती मध्ययुगीन काल में पाए गए थे, इसलिए हमारे पास एक यहूदी समूह है जिसने उनमें से कुछ को पाया और फैसला किया कि रब्बियों की मौखिक परंपरा गलत थी और दूसरी तरफ चला गया। उनका नाम इस समय मेरे दिमाग से निकल गया है, इसलिए शायद हम इस खंड को समाप्त करने से पहले वापस आएँ।

फरीसियों का अस्तित्व पर प्रभाव काफी महत्वपूर्ण है। वे यरूशलेम के विनाश से बचकर बचे हुए यहूदियों में प्रमुख समूह बन गए, और रब्बी साहित्य सद्दूकियों के उत्तराधिकारियों द्वारा लिखा गया है, इसलिए यह वह सामग्री है जो पूरी शताब्दियों में रूढ़िवादी यहूदी धर्म पर हावी रही है। जहाँ तक हम जानते हैं, सद्दूकियों के लिए, उनके ज्ञात लेखन में से कोई भी जीवित नहीं है।

हम वास्तव में उनके किसी भी लेखन के नाम नहीं जानते हैं, लेकिन उस अवधि में बची हुई किसी भी रचना को सद्दूकी नहीं माना जाता है। उनमें से कुछ हो सकते हैं, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, हम उनके बारे में इतना नहीं जानते कि कुछ कह सकें। एसेन, कुमरान, 68 में नष्ट हो गए थे, इसलिए यहूदी युद्ध के बीच में, कुछ एसेन बच गए।

वास्तव में, कुछ लोग 72 में मसाडा में अंतिम पड़ाव पर थे, और उनकी कुछ सामग्री काइरो जेनिज़ा में दिखाई दी, जो कि दस्तावेज़ों को छिपाने का स्थान है, आराधनालय में पुराने दस्तावेज़। जिसे हम दमिश्क दस्तावेज़ कहते हैं, वह निश्चित रूप से उनका है और इसकी एक प्रति काइरो जेनिज़ा में लगभग एक शताब्दी पहले, नहीं, इतना लंबा नहीं, 70 साल, डेड सी स्क्रॉल की खोज से 60 साल पहले मिली थी। फरीसी समूह ने 70 ईस्वी में यहूदी धर्म पर हावी होने के लिए विनाश से बच गए, और ऐसा लगता है कि सद्दूकियों को मंदिर के साथ कमोबेश नष्ट कर दिया गया था, यह कहने का मतलब नहीं है कि हर आखिरी व्यक्ति नष्ट हो गया था, लेकिन उस दिशा में कुछ हुआ।

खैर, हमारी अंतिम श्रेणी रोमनों के अधीन फिलिस्तीन है। अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो यह वास्तव में हमारी अंतिम श्रेणी है। 63 ईसा पूर्व से 135 ईस्वी तक, जहाँ हम इस चर्चा को रोकेंगे, लेकिन वास्तव में वहाँ से लेकर 600 के दशक में मुसलमानों के आने तक, रोमनों के अधीन फिलिस्तीन है।

हेसमोनियन राजवंश 63 ईसा पूर्व में समाप्त हो गया। आपको याद होगा कि हिरकेनस द्वितीय और एरिस्टोबुलस द्वितीय के बीच झगड़ा हुआ था। हम कह सकते हैं कि एरिस्टोबुलस ने राजगद्दी हथिया ली थी।

हिरकेनस ने छिपने के लिए भागकर रोमनों को बुलाया था। अब, रोमनों ने विवाद में हस्तक्षेप किया, और वे एरिस्टोबुलस को नीचे गिराने में सक्षम थे, और यहूदिया अब अपने जीते हुए क्षेत्रों में से बहुत कुछ खो चुका है। हिरकेनस को राजा नहीं बनाया गया, ठीक है, वह अन्यथा राजा होता।

उसे एथनार्क बनाया गया, ठीक है, एक जन समूह का शासक, हम कह सकते हैं, यहूदिया का, हालाँकि इस समय यहूदिया में इदुमिया, पेरिया, गैलिली, आदि शामिल हैं, इसलिए राजा से पदावनत।

इस समय अवधि की विशेषता यह है कि हम रोमन शांति, पैक्स रोमाना कह सकते हैं, जो लगभग 30 ईसा पूर्व से शुरू होती है, जब ऑगस्टस ने लगभग दो शताब्दियों तक साम्राज्य पर नियंत्रण स्थापित किया, लगभग 170 ईस्वी तक। रोमन साम्राज्य पर दो शताब्दियों तक शांति रही, इसका मतलब यह नहीं है कि ऑगस्टीन से शुरू होकर कुछ विद्रोह और इस तरह की घटनाएँ नहीं हुईं। रोमन साम्राज्य का महान विकास और समृद्धि दूसरी शताब्दी ईस्वी में अपने चरम पर पहुंच गई।

पैक्स रोमाना ईसाई धर्म के प्रसार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए हमारे पास पूरे क्षेत्र में रोमन शांति है। रोमन शासन से संबंधित कुछ अन्य विशेषताएँ जो ईसाई धर्म के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण थीं, वे थीं कि रोमनों ने उस पूरे क्षेत्र में प्रभावशाली सड़क प्रणालियाँ बनाईं। 20वीं सदी में ऑटोमोबाइल के विकास और राष्ट्रीय सीमाओं के अभाव तक कोई रोमन, कोई व्यापक सड़क प्रणाली नहीं थी।

मेरा मतलब है, यहाँ-वहाँ जातीय समूह तो थे, लेकिन साम्राज्य में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए पासपोर्ट या उसके समकक्ष किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, मानवीय दृष्टि से ईसाई धर्म के प्रसार के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था। हमें हेरोदेस परिवार के बारे में भी कुछ कहना चाहिए क्योंकि वे इस समय महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मैंने इससे पहले उनके बारे में कुछ भी नहीं सुना था, लेकिन इसकी शुरुआत हेरोदेस के पिता से होती है, जिनका नाम एंटीपेटर था। वह एक इदुमीयन था, यानी एक एदोमीट, लेकिन हिरकेनस द्वितीय का सलाहकार था, और क्योंकि हिरकेनस काफी विनम्र और महत्वाकांक्षी नहीं था, इसलिए ऐसा लगता है कि सिंहासन के पीछे एंटीपेटर की शक्ति थी। जब रोमनों ने सत्ता संभाली, तो जूलियस सीज़र की सहायता करने के लिए उसे यहूदिया का प्रॉक्यूरैटर बनाया गया।

प्रॉक्यूरैटर का मतलब था वह व्यक्ति जो किसी विशेष क्षेत्र या देश में सम्राट के मामलों के लिए जिम्मेदार था। एंटीपेटर, जैसा कि एक या दूसरे प्रकार के कई शासकों की विशेषता होगी, ने अपने बेटों को अपने अधीन प्रशासक बनाया, और वे बेटे थे फेसल, जिसके बारे में शायद आप में से बहुत कम लोगों ने सुना होगा, और हेरोद, जिसके बारे में अब तक लगभग सभी ने सुना होगा। लेकिन 43 ईसा पूर्व में एंटीपेटर की हत्या कर दी गई, और इसके कारण हेरोद का उदय हुआ जिसे हम हेरोद द ग्रेट कहते हैं, जो 37 ईसा पूर्व से अपनी मृत्यु तक महत्वपूर्ण था।

मेरे पास यहाँ 4 ई.पू. है। इस पर कुछ बहस है, लेकिन यह अभी भी मानक तिथि है। एंटीपेटर की मृत्यु के साथ, रोमनों ने हेरोदेस और फ़ेसियल को इस क्षेत्र का संयुक्त टेटार्क नियुक्त किया।

टेटार्क एक और शब्द है। आप इसके अंत में मेहराब, शासक और यहाँ टेट का अर्थ तिमाही देख सकते हैं। यह किसी उप-क्षेत्र के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था, इसलिए वे यहूदिया के

टेट्रार्क थे, मुझे लगता है, हेरोदेस और फ़ेसियल, लेकिन क्षेत्रों में, जैसा कि मैंने कहा, गलील और सामरिया और इदुमिया, साथ ही यहूदिया भी शामिल थे।

ठीक इसी समय, रोमन साम्राज्य के ठीक बाहर पूर्वी छोर पर स्थित पार्थियनों ने रोमन साम्राज्य के पूर्वी छोर पर आक्रमण किया और कुछ समय के लिए फिलिस्तीन पर कब्ज़ा कर लिया और फ़ेसल को मार डाला। उन्होंने फ़ेसल को पकड़ लिया और उसे जेल में डाल दिया और फ़ेसल ने यातना या उस तरह की किसी चीज़ से बचने के लिए उसका सिर फोड़ दिया। हेरोद भागने में सफल हो गया और 40 ईसा पूर्व में रोम पहुँचने में सफल रहा और वहाँ की सीनेट ने उसे यहूदियों का राजा नियुक्त किया।

खैर, इसमें उन्हें बहुत ज़्यादा खर्च नहीं करना पड़ता, और विचार यह है कि उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो बहुत महत्वाकांक्षी हो, और वे उसे विभिन्न लोगों से बहुत सारा पैसा उधार लेने की अनुमति देंगे। उसे रोमनों से कोई बड़ा वजीफ़ा नहीं मिलता। रोमन अपने समाज को चलाने में काफ़ी सस्ते थे।

हम यहाँ इस बारे में नहीं जानेंगे, लेकिन इसलिए उसे कम से कम पैसे उधार लेने की अनुमति है। उसे यह अधिकार, अगर आप चाहें, तो सीनेट से मिला है, और इसलिए वह वापस जाता है और सेना के साथ लौटता है और 37 ईसा पूर्व में यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लेता है। इसलिए, अब वह यहूदियों का राजा बन जाता है, नाम में 40, वास्तव में 37।

हालाँकि, एक समस्या है। रोमन, यदि आपको इस अवधि से रोमन इतिहास का कुछ भी याद है, और शायद आपको याद नहीं है, वैसे भी उस समय स्कूल में मेरे पास कुछ भी नहीं था; जूलियस सीज़र की हत्या के साथ, हमारे पास एक त्रिमूर्ति है, और यह मार्क एंटनी और वह व्यक्ति है जिसे अंततः ऑगस्टस कहा जाने वाला है, और लेपिडस, मुझे लगता है, तीसरा व्यक्ति है और पूर्वी भाग एंटनी के अधीन है, और एंटनी क्लियोपेट्रा के प्रभाव में बहुत अधिक है, और क्लियोपेट्रा यहूदिया को पसंद करेगी, इसलिए हेरोदेस का सिंहासन बहुत असुरक्षित है जब तक कि एंटनी और क्लियोपेट्रा दोनों ने 31 ईसा पूर्व में आत्महत्या नहीं कर ली, और उसके बाद वह अपनी मृत्यु तक बहुत अच्छी स्थिति में है। हालाँकि, इस अवधि के दौरान उसे भयानक पारिवारिक परेशानियाँ झेलनी पड़ीं।

वह अपनी पसंदीदा पत्नी मरियम्रे को मार देता है, जो मैकाबीज़ की वंशज थी और उसे, हम क्या कहें, मैकाबीज़ के साथ उसका संबंध दिया, क्योंकि अन्यथा वह मूल रूप से रोमनों द्वारा नियुक्त व्यक्ति है, यदि आप चाहें, और फिर समय के साथ वह अपने तीन बेटों को मार देता है, उनमें से दो मरियम्रे के बेटे हैं, और उसे डर है कि वे सिंहासन को पाने की कोशिश करेंगे इससे पहले कि वह इसे छोड़ने के लिए तैयार हो, और निश्चित रूप से नहीं पता कि वह इस बारे में सही था या नहीं, और फिर वह अपने तीसरे बेटे को मार देता है जो अन्य दो बेटों से ईर्ष्या करता है और उन्हें मरवा देता है और ऐसा ही कुछ, तो एक समय पर यह इतना बुरा हो गया कि ऑगस्टस, हेरोदेस की कोषेर खाद्य गतिविधि पर टिप्पणी करते हुए कहता है कि हेरोदेस के बेटों में से एक होने की तुलना में उसके सूअरों में से एक होना अधिक सुरक्षित है, और ग्रीक में कौन सूअर है और कौन बेटा है, के बीच थोड़ा खेल है, तो यही स्थिति है। खैर, हेरोदेस के पास, हालाँकि, कुछ उपलब्धियाँ

हैं। उसे महान इसलिए नहीं कहा गया क्योंकि उसने अपनी पत्नी और तीन बेटों की हत्या की थी या ऐसा कुछ भी किया था।

उन्हें महान इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने बहुत बड़े क्षेत्र पर शासन किया था। उन्होंने 19 ईसा पूर्व से शुरू करके अपने जीवन के बाकी समय तक और फिर 66 ईस्वी तक यरूशलेम मंदिर का जीर्णोद्धार किया। वे उस मंदिर में लगातार काम कर रहे थे और मूल रूप से यहूदी विद्रोह के बाद इसके विनाश से ठीक पहले इसे पूरा कर लिया था।

उन्होंने इज़राइल में अन्य जगहों पर कई निर्माण परियोजनाएं कीं, जैसे कि सेबेस्टिया के तट पर कैसरिया, जो पहले सामरिया का शहर था, आदि। इसलिए, यदि आप आज यरूशलेम वापस जाते हैं और पुरातत्व को देखते हैं, तो कुछ सबसे प्रमुख खंडहर, कम से कम सतह के ऊपर, अक्सर एक या दूसरे प्रकार के हेरोदियन खंडहर होते हैं। यरूशलेम शहर के चारों ओर की कुछ दीवारें, जैसे कि अब्राहम की कब्र, बेथलेहम में हैं।

नहीं, हेब्रोन, हेब्रोन, शुक्रिया, बेथलेहम नहीं, आदि उस तरह की श्रेणी में आते हैं। मैथ्यू के सुसमाचार में बेथलेहम के बच्चों की हत्या का बहुत स्पष्ट उल्लेख है, लेकिन हालांकि हेरोदेस के अन्य ऐतिहासिक अभिलेखों में इसके बारे में कोई स्पष्ट कथन नहीं है, लेकिन यह उसके चरित्र के साथ बहुत मेल खाता है।

उसने अपने तीन बेटों को मार डाला और वे उसके उत्तराधिकारी बन सकते थे, उनमें से कोई एक या दूसरा, लेकिन वह सिर्फ़ इस बात से नाखुश था कि वे बहुत जल्दी सफल होना चाहते थे। तो, आप देख सकते हैं कि सिंहासन के लिए गैर-हेरोदेसियन दावेदार को वह कितना खतरनाक मानता होगा। खैर, जब हेरोदेस की आखिरकार मृत्यु हो गई, तो उसने एक वसीयत तैयार की थी, जिसे रोम में ऑगस्टस द्वारा मान्य किया जाना था।

इसलिए, अपनी वसीयत में, उसने निर्दिष्ट किया कि उसका बेटा अर्खेलाँस राजा होगा और उसके साम्राज्य के प्रमुख बंदरगाह और उसके क्षेत्र पर शासन करेगा और एंटीपस गैलिली और पेरिया पर शासन करेगा, और फिलिप उसके उत्तर में कुछ क्षेत्रों, इरिट्रिया, ट्रेकोनितिस पर शासन करेगा, और वे लोग मान्यता प्राप्त करने के लिए रोम चले गए। यीशु के पास एक कुलीन व्यक्ति के बारे में एक दृष्टांत है जो राज्य वापसी प्राप्त करने के लिए दूर देश जाता है, और यह कुछ ऐसा है जो उसके श्रोताओं के साथ प्रतिध्वनित हुआ होगा क्योंकि कुछ ही समय पहले ऐसा ही कुछ हुआ था। खैर, अर्खेलाँस के हेरोदेस परिवार में कई लोग हैं जो उसके राजा बनने का विरोध करते हैं, इसलिए ऑगस्टस उसे एथनार्क की उपाधि देता है, लेकिन अगर वह अच्छा काम करता है तो उसे राजा बना दिया जाएगा।

वह बहुत अच्छा काम नहीं करता है, और इसलिए उसे लगभग 10 वर्षों में पदच्युत कर दिया जाता है। हालांकि, अन्य दो भाई अपने क्षेत्रों में काफी अच्छा काम करते हैं, और इसलिए एंटीपस 39 ईस्वी तक शासन करता है, फिलिप 34 ईस्वी तक शासन करता है, लेकिन अर्खेलाँस केवल लगभग 6 ईस्वी तक शासन करता है। हेरोदेस के इनके अलावा दो वंशज हैं, एक पोता और परपोता, मुझे लगता है, जो भी शासन करते हैं।

ये मरियम के वंशज हैं और इसलिए, हेरोदेस द्वारा मारे गए एक या दोनों बेटों के वंशज हैं। उनमें से एक हेरोदेस अग्रिप्पा I है, और उसे वास्तव में थोड़े समय के लिए, 41 से 44 ई. तक यहूदियों का राजा की उपाधि मिली, लेकिन फिर उसकी मृत्यु हो गई, और उसकी मृत्यु का वर्णन हमें जोसेफस और एक्ट्स दोनों में मिलता है। फिर उसका बेटा, हेरोदेस अग्रिप्पा II, राजा तो बना, लेकिन यहूदियों का राजा नहीं। वह दूसरे क्षेत्र का राजा है, और वह लगभग 100 ई. तक जीवित रहा।

तो यह हेरोदेस राजवंश का अंत है, और फिर, आखिरकार, उस बिंदु पर। खैर, हमारे पास यहाँ एक और खंड है। मैं इसके बारे में थोड़ा कहना चाहता हूँ। खैर, यह वास्तव में दो और खंड हैं।

मैं कभी भी सटीक रूप से ट्रैक नहीं रखता। ठीक है, हाँ, दो और खंड। इस अवधि के लिए एक महत्वपूर्ण, रोमन शासन, नए नियम की अवधि के अंत में मसीहाई अपेक्षा है।

किसी कारण से, जोसेफस ने इसका उल्लेख किया, सुएटोनियस ने इसका उल्लेख किया, और टैसिटस ने इसका उल्लेख किया। इस विचार पर काफी उत्साह था कि इस समय के आसपास इज़राइल से आने वाला कोई व्यक्ति दुनिया पर शासन करेगा। इसलिए, यह पहली शताब्दी ईस्वी में मजबूत था, और यहूदी विद्रोह में प्रभावशाली था, और मेरा सुझाव है कि इसका डैनियल के 70-सप्ताह के मार्ग से कुछ लेना-देना था, कि उनके पास शायद यह जानने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं थी कि यह कब समाप्त हुआ, लेकिन यह बहुत स्पष्ट था कि यह पहली शताब्दी ईस्वी में समाप्त हो जाएगा।

मैंने अपनी पुस्तक, एविडेंस ऑफ प्रोफेसी, के एक अध्याय, मसीहा का समय में इसकी थोड़ी चर्चा की है, और मुझे लगता है कि हमारी हिब्रू वेबसाइट पर भी इसी शीर्षक से इस विषय पर एक शोध रिपोर्ट है।

नए नियम के अंत में मसीहाई अपेक्षाओं के बारे में, लोगों ने क्या अपेक्षा की थी? उन्हें किस तरह के मसीहा की अपेक्षा थी? उन्हें किस तरह के व्यक्ति की अपेक्षा थी? खैर, जैसा कि हम अपने पास मौजूद सामग्री को देखते हैं, हम देखते हैं कि समय के साथ विचार बदलते हैं। मसीहा पर प्रारंभिक अतिरिक्त-बाइबिल सामग्री ने मसीहा को मानव से अधिक के रूप में चित्रित किया, हालांकि किसी भी अतिरिक्त-बाइबिल सामग्री में उनके देवता के बारे में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है। पुराने नियम में कुछ संकेत से भी अधिक हैं, और जाहिर है, नया नियम उसी तरह जाता है, लेकिन अन्य अतिरिक्त-बाइबिल सामग्री किसी प्रकार की स्वर्गदूतीय दिशा में जाती है, लेकिन उससे बहुत आगे नहीं। बाद की रब्बी सामग्री एक या दूसरे तरीके से मसीहा को कम करने की ओर प्रवृत्त होती है।

मसीहा के बारे में पुराने नियम के डेटा ने कार्यालय, उसकी गतिविधि, आने के प्रकार, होने के प्रकार आदि के बारे में विभिन्न विरोधाभासों को प्रस्तुत किया, और मेरा सुझाव है कि इनका समाधान नए नियम और उनके उम्मीदवार यीशु द्वारा किया जाता है, यदि आप चाहें और इस पर एक और लेख है, मसीहा का नया नियम मॉडल जो मुझे लगता है कि इस पुस्तक में मसीहा की

प्रकृति है भविष्यवाणी का प्रमाण लेकिन हमारे अध्याय में मसीहा का नया नियम मॉडल जो IBRI वेबसाइट IBRI शोध रिपोर्ट पर है। हम अंतर-नियम अवधि से मसीही अवधि पर विभिन्न विचारों को भी पाते हैं, यह उस समय अवधि से कैसे संबंधित होगा जिसमें हम अभी रह रहे हैं, यह पुनरुत्थान के बाद की स्थिति से कैसे संबंधित होगा, और उस तरह की चीजें, और यह हमें दिखाता है कि एक निश्चित अर्थ में यहूदियों के विचार जो हम पुराने नियम को हिब्रू बाइबिल कहते हैं, की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं, जो कि युगांतशास्त्र के बारे में आज के ईसाइयों के विचारों से कुछ समानता रखते हैं।

कोई यह भी दावा कर सकता है कि मसीहाई काल के बारे में उनके विचार बॉल मिल, प्री-मिल और पोस्ट-मिल से कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं, वे बहुत करीब नहीं हैं, ठीक है, लेकिन उस दिशा में कुछ है। उदाहरण के लिए, विभिन्न विचारों ने उस समय अवधि को देखा जिसमें हम हैं, और वे इस युग को शीर्षक देते हैं, और फिर मसीहा के दिन और फिर आने वाला युग और युग के अंत के कुछ विचारों में आपके पास मूल रूप से केवल मसीहाई काल था, इसलिए आपके पास यह युग और मसीहा का समय है और इसलिए आपके पास किसी तरह का सहस्राब्दी था जिसे हम पृथ्वी पर कह सकते हैं लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि उसके बाद क्या होगा। अन्य विचारों में केवल यह युग आने वाला युग था, और इसलिए यह किसी तरह से एक सर्व-सहस्राब्दी स्थिति जैसा होगा यदि आप चाहें लेकिन सबसे आम दृष्टिकोण यह था कि यह युग मसीहा का समय था, और आने वाला युग, जो अब सहस्राब्दी और शाश्वत अवस्था होगी यदि आप चाहें और इसलिए इस तरह के पूर्व-सहस्राब्दी युगांतशास्त्र में क्या फिट होगा।

घटनाओं का क्रम इस समय यहूदी व्याख्याकार मूल रूप से पुराने नियम के सभी भविष्यसूचक डेटा को ले रहे हैं जो कि युगांत संबंधी प्रतीत होते हैं और यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि इसे कैसे क्रमबद्ध किया जाए। यह एक पहली में टुकड़ों को एक साथ जोड़ने जैसा है, लेकिन आपके पास तस्वीर नहीं है, ठीक है? आपको बस टुकड़े मिले हैं, इसलिए आप टुकड़ों को देखते हैं, और आप कहते हैं कि क्या इस टुकड़े पर वह रंग है, क्या यह टुकड़ा मेल खाएगा, आदि? इसलिए यह एक कठिन काम है, और फिर भी, जैसा कि आप इसे एक साथ देखते हैं, वे बहुत सी चीजों को उठाते हैं जो कम से कम पूर्व-सहस्राब्दी ईसाई कहेंगे कि उन्होंने सही किया। उन्होंने वास्तव में पुराने नियम में ऐसी चीजें देखीं जिन्हें हमने केवल नए नियम या उस तरह की किसी चीज़ में देखा होगा। इसलिए, उदाहरण के लिए, उन्होंने देखा कि अंत से पहले कुछ संकेत होंगे, नैतिक पतन होगा, आपदाएँ होंगी, स्वर्ग में संकेत होंगे, एक अग्रदूत होगा, ठीक है, और फिर मसीहाई राज्य स्थापित होगा, और मसीहाई राज्य में निर्वासन से इज़राइल की वापसी शामिल होगी, जहाँ शायद आज एक पूर्व-सहस्राब्दीवादी कहेगा कि शायद पहले पर्याप्त वापसी होगी और फिर सहस्राब्दी होगी, लेकिन उस दृष्टिकोण से भी आपको लगता है कि उसके बाद भी कुछ वापसी होगी। राष्ट्रों को दण्डित किया जाएगा, ठीक है और मसीहा शासन करेगा और इस बात पर विभिन्न विचार थे कि मसीहा को राज्य की स्थापना के साथ क्या करना होगा, क्या इसे पहले स्थापित किया जाएगा और फिर उसे लाया जाएगा या क्या वह इसे स्थापित करने में शामिल होगा और आप ऐसे मॉडल में भी गए जहाँ दो मसीहा थे, एक जो इसे स्थापित करेगा और दूसरा जो वास्तव में शासन करेगा, हम वहाँ नहीं जा रहे हैं और यह शायद वैसे भी इंटरटेस्टामेंटल अवधि के बाद भी है।

फिर मसीहा के दिन हैं, जिसे हम ईसाई सहस्राब्दी कहते हैं, और इसमें परिवर्तनशील विशेषताएं हैं, जैसा कि विभिन्न व्याख्याकारों द्वारा एक साथ रखा गया है, राष्ट्रों का स्थान क्या होगा? क्या वे इसमें शामिल होंगे, या वे इसराइल के अधीन होंगे, आदि। लेकिन आम तौर पर, मसीहा के समय को एक तरह से या किसी अन्य तरीके से इस युग से अधिक चमत्कारी माना जाता था। अवधि अनिश्चित है, और कुछ 40 साल के साथ जाते हैं, जबकि अन्य एक हजार से अधिक हैं। इसे आमतौर पर गोग और मागोग के विद्रोह के साथ समाप्त होने के रूप में देखा जाता था, इसलिए यह दिलचस्प है। यह वाक्यांश निश्चित रूप से, रहस्योद्घाटन में दिखाई देता है, लेकिन यह जकेल में भी दिखाई देता है, और इसलिए वे ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं, और फिर आने वाले युग के बारे में क्या, जिसे ईसाई शायद शाश्वत अवस्था कहेंगे, उन्होंने एक पुनरुत्थान देखा, उन्होंने एक न्याय देखा, और उन्होंने या तो दंड या पुरस्कार की एक शाश्वत अवस्था देखी, इस तरह से हम यहाँ जो देखते हैं उसके समान।

खैर, यहाँ दो और बातें हैं जिनके बारे में थोड़ा जल्दी से कहना है: यरूशलेम के पतन के बाद यहूदी राज्य और फिलिस्तीन का अंत। रोम और इज़राइल दोनों और कम से कम कुछ यहूदियों ने यहूदी राज्य के अंत में काफी हद तक योगदान दिया। रोमन शासकों ने 86 से 66 तक फिलिस्तीन को नियंत्रित किया, 41 से 44 की अवधि को छोड़कर जब हेरोद अग्रिप्पा नियंत्रण में था, मूल रूप से इज़राइल के लिए बहुत अच्छा समय नहीं था।

इसकी शुरुआत छह में प्रतिस्थापन अर्चेलाउस से हुई, जिसने गलत शासन के लिए एक यहूदी अनुरोध को खारिज कर दिया, और इसलिए रोमनों ने अपने गवर्नर लाए जिन्हें प्रीफेक्ट या प्रॉक्पूरेटर कहा जाता था। 86 में, जब ऐसा होता है, तो जनगणना के बारे में कट्टरपंथियों का विद्रोह होता है, और यह आने वाली चीजों का एक संकेत था। इस 60 साल की अवधि में रोमन-यहूदी संबंधों के बिगाड़ने के साथ-साथ कट्टरपंथी धीरे-धीरे मजबूत होते गए।

फिर लगभग 40 ई. में रोमन सम्राट गयुस, जिसे हम कैलीगुला के नाम से जानते हैं, को भव्यता का भ्रम हुआ और उसने आदेश दिया कि यरूशलेम मंदिर में उसकी अपनी प्रतिमा स्थापित की जाए। सौभाग्य से, आदेश के क्रियान्वयन से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई, लेकिन उस समय के रोमन अभियोजक ने वास्तव में इसे विलंबित करके अपने जीवन को जोखिम में डाल दिया, और फिर रोम में उन लोगों द्वारा कैलीगुला की हत्या कर दी गई, जो वैसे भी अन्य चीजों में रुचि रखते थे। यहूदी विद्रोह के फैलने तक 41 से 44 में हेरोद अग्रिप्पा को छोड़कर अभियोजक जारी रहे।

सामान्य तौर पर, अभियोजक यहूदियों को नहीं समझते थे। वे अक्सर यहूदियों के विरोधी थे। ग्रीको-रोमन दुनिया में यहूदी-विरोधी भावना काफी आम थी, और इसलिए वे परिस्थितियों को और बिगाड़ने की कोशिश करते थे और इस तरह, उन कट्टरपंथियों को मजबूत करते थे जो उनके खिलाफ थे।

इसलिए, अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि जैसे-जैसे स्थिति बदतर होती गई, कट्टरपंथी ज़्यादा लोकप्रिय होते गए। रोमन शासकों में से आखिरी दो एल्बिनस और फ्लोरस विशेष रूप से दुष्ट व्यक्ति थे। खैर, इसी वजह से 66 से 73 ईस्वी में पहला यहूदी विद्रोह हुआ।

वास्तव में इसकी शुरुआत कैसरिया में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच हुई एक घटना से हुई थी और इसे पूरे देश में भड़काने के लिए प्रोक्यूरेटर और कट्टरपंथियों द्वारा फैलाया और हवा दी गई थी। शुरुआत में, उदारवादी यहूदी नेतृत्व करने में सक्षम थे, और इसी तरह जोसेफस ने नेतृत्व संभाला, लेकिन धीरे-धीरे, वे अधिक कट्टरपंथी कट्टरपंथियों से हार गए। विद्रोह का अंत 70 ई. में यरूशलेम और उसके मंदिर और यहूदी राज्य के विनाश के साथ हुआ, और फिर 73 ई. में मसादा के पतन के साथ सफाई अभियान पूरा हुआ।

यरूशलेम के पतन के बाद, फिलिस्तीन 70 से 135 तक चला गया, जहाँ हम रुकेंगे। यहाँ एक महत्वपूर्ण व्यक्ति रब्बी योहानान बेन-ज़चाई है। वह घेराबंदी के दौरान यरूशलेम में था और उसे एहसास हुआ कि यह एक आपदा होने जा रही है, और इसलिए अपने शिष्यों की मिलीभगत से, उसने बीमार होने का नाटक किया और, मुझे लगता है, शायद किसी बहुत ही संक्रामक बीमारी से और मरने का नाटक किया और वे उसे एक ताबूत में ले गए और चूँकि यह संक्रामक बीमारी थी, इसलिए कोई भी ताबूत में देखने वाला नहीं था और जैसे ही वे दीवारों की सीमा से बाहर निकल गए, वह ताबूत से बाहर निकल गया और वे रोमनों के पास भाग गए आदि।

योहानान को रोमियों से तटीय शहर जामनिया में एक रब्बी स्कूल और एक महासभा स्थापित करने की अनुमति मिली, जो यवनेह का पुराना नियम का नाम था, और वहाँ उन्होंने फरीसीवाद की तर्ज पर राज्य या मंदिर के बिना यहूदी धर्म का पुनर्निर्माण किया और इससे अंततः मौखिक कानून मिश्राह और फिर बाद में तल्मूड का संहिताकरण हुआ। 90 ईस्वी के आसपास, 90 से 100 ईस्वी के बीच आराधनालय की पूजा पद्धति में नाज़रीन पर एक अभिशाप जोड़कर यहूदी ईसाइयों को आराधनालयों से बाहर कर दिया गया था, और इस तरह उस बिंदु के बाद, इस सवाल पर कि यीशु मसीहा हैं या नहीं, ईसाइयों और यहूदियों के बीच पहले से ही स्पष्ट तनाव था, लेकिन इस तरह की बातें चीजों को विभाजित करती हैं इसलिए ईसाई यहूदी अब गैर-ईसाई यहूदियों के साथ पूजा नहीं कर रहे हैं।

इस समय तक यहूदियों ने अपना राज्य खो दिया था, लेकिन अभी भी बहुत सारे यहूदी इजराइल में रह रहे थे, हालांकि उनमें से बहुत से लोगों को गुलाम बनाकर ले जाया गया था, विशेष रूप से वे जो यरुशलम में ले जाए गए थे, लेकिन हम आगे बढ़ते हैं, आप जानते हैं, 73 से 132 लगभग 60 साल है और रोमन यरुशलम के किनारे एक बुतपरस्त शहर बनाने की तैयारी कर रहे हैं और इसका नाम एलिया कैपिटोलिना रखा जाएगा। कैपिटोलिना रोमन देवताओं के प्रमुख देवताओं के सम्मान में है, और एलिया उस समय के रोमन सम्राट हैड्रियन का पारिवारिक नाम है और यहूदियों को एहसास हुआ कि अगर ऐसा हुआ, तो वे निकट भविष्य में कभी भी यरुशलम वापस नहीं पा सकेंगे, इसलिए उस समय के प्रमुख रब्बियों में से एक रब्बी अकीबा ने एक दार्शनिक बेन-कोसिबा को पहचाना जो स्पष्ट रूप से मसीहा के रूप में विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए तैयार थे और संख्या 2417 की पूर्ति के लिए याकूब से एक सितारा उगेगा, इसलिए उन्हें बार कोखबा के रूप में जाना जाता है, एक सितारे का बेटा जो उनके अपने नाम बेन-कोसिबा पर एक तरह का नाटक है। विद्रोह शुरू में सफल रहा। रोमनों ने वास्तव में एक बहुत छोटी सेना के साथ अपने साम्राज्य को नियंत्रित किया, और इसलिए यह पूरे स्थान पर फैल गया। इसलिए, जब विद्रोह हुआ, तो यह कुछ समय तक सफल रहा, जब तक कि रोमनों ने संगठित होकर अपनी

सेनाएँ नहीं ला दीं, और यही यहाँ भी हुआ, लेकिन अंततः इसे बहुत अधिक नरसंहार के साथ दबा दिया गया।

उसके बाद, यहूदियों को प्रायश्चित के दिन को छोड़कर यरूशलेम के पास आने की मनाही कर दी गई, और उसके बाद, यरूशलेम एक मिशनरी धर्म नहीं रहा। खैर, मुझे लगता है कि यह आपको पुराने नियम के अंत से लेकर नए नियम के अंत तक यहूदी पृष्ठभूमि का एक प्रकार का दौरा देता है, ताकि आपको उस समय अवधि में क्या चल रहा था, इसका थोड़ा सा एहसास हो सके। तो आज हम यहीं रुकेंगे।

यह एक लंबी बात थी, हाँ, लेकिन यह वास्तव में पूरी दूसरी इकाई है, ठीक है? तो, हमने दो इकाइयाँ कर ली हैं।